शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन कार्यक्रम (प्रथम वर्ष)

मार्गदर्शिका

1. शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन कार्यक्रम से आशय :–

गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा के विचार को साकार रूप देने के लिए ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम एवं अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जो शिक्षकों में बच्चों की समझ, शिक्षा की समझ, समस्याओं को पहचानने तथा विभिन्न समकालीन चुनौतियों पर चिंतन कर उन पर विजय प्राप्त कर सकने में मदद कर सके। इससे विद्यालयों में बच्चों के लिए न केवल विकास की परिस्थितियाँ निर्मित होंगी बल्कि बच्चे सीखने में आत्मनिर्भर बनेंगे। डी.एड. नवीन पाठ्यक्रम में शिक्षकों की समझ एवं आवश्यक क्षमताओं को इसी दिशा में विकसित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों की आवश्यकता, नवीनतम् शिक्षा सिद्धांतों एवं बहुआयामी विकास कार्यक्रमों की समझ बढ़ाने हेतु प्रयोग एवं अभ्यास के अवसर उपलब्ध कराए गए हैं। समझ की स्पष्टता के लिए प्रशिक्षु शिक्षक विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों में शालेय कार्य पर चिंतन मनन का अनुभव प्राप्त करेंगे।

द्विवर्षीय डी.एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत् शिक्षा के सैद्धांतिक पक्षों तथा शिक्षण कार्य को एक दूसरे की पृष्ठभूमि में समझा जाएगा। यह कार्य प्रथम वर्ष 60 कार्य दिवसों (लगभग 2 माह) में संपन्न किया जाएगा।

2. परिप्रेक्ष्यः

शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन कार्यक्रम की संकल्पना स्कूल के समग्र अनुभव पर चिंतन मनन सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से की गई है। एन.सी.टी.ई. (राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्) / एन.सी.ई.आर.टी. (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्) के दस्तावेजों व शिक्षक–शिक्षा पर हो रही चर्चाओं में इस बात पर अधिक जोर दिया जा रहा है कि शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन कार्यक्रम का उद्देश्य केवल एक विषय के पाठों की, पाठ योजना बना कर प्रदर्शन के लिए नहीं होना चाहिए अपितु इसमें प्रशिक्षु शिक्षकों को सम्पूर्ण शाला के साथ कार्य करके उसके विभिन्न पहलुओं यथाः बच्चे, कक्षा, कक्षा कक्ष प्रक्रिया, बच्चों के सीखने की प्रक्रिया, पाठ्यक्रम आदि को शिक्षक की भूमिका के बदलते संदर्भ में समझने का अवसर मिलना चाहिए। यह शाला अनुभव योजना, 40 स्वतंत्र पाठ योजनाओं से कई अर्थों में अलग है। इसमें शिक्षण क्रिया पर ध्यान दिए जाने की अपेक्षा सीखने–सिखाने में बच्चों की भूमिका पर ध्यान दिया जाएगा। पहले दिन किए गए कार्य का अगले दिन से प्रभाव देखा जाएगा। साथ ही जो भी विषय पढ़ाया गया है उसका बाद में पढ़ाई गई सामग्री व प्रक्रिया से संबंध स्थापित किया जाएगा। यह अपेक्षा है कि प्रशिक्षु शिक्षक 60 दिवसीय शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन में कुछ लक्ष्य उदाहरणार्थः जोड़ की अवधारणा पर काम, गुणा, पढ़ना–लिखना सिखाना, कहानी के साथ काम करना और यह देखना कि भाषा सीखने में कहानी बच्चों की कैसे मदद करती है और ऐसे ही अन्य विषय पर कार्य करें। सम्बन्धित विषयों पर कार्य करते हुए वे सिर्फ यह ही नहीं देखेंगे कि बच्चे ली गई अवधारणाओं को कितना सीखे हैं वरन् इस दौरान जैसा कि ऊपर भी कहा गया है; वे बच्चे कैसे सीखते हैं, सीखने के दौरान बच्चों को कहाँ–कहाँ किस तरह की कठिनाइयाँ आती है व क्यों आती है तथा उसके लिए क्या किया जा सकता है इन पर नियमित विचार कर उसका सतत् आकलन करते हुए आगे बढ़ेंगे। शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षु एक–दूसरे से विभिन्न विषयों पर अपनी समझ को बाँट सके, उस पर चर्चा कर सके व सार्थक निष्कर्ष निकाल सके।

3. शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन के उद्‌देश्यः–

शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन के निम्नांकित उद्‌देश्य हैं :–

- शाला में कार्य करते हुए शाला को तथा उसमें कार्य करने के तरीको को समग्र रूप से समझने हेतु अवसर प्रदान करना।
- वास्तविक परिस्थितियों में प्रभावी शिक्षण के लिए सैद्धांतिक समझ का व्यवहार में उपयोग और चिंतन क्षमता का विकास करना।

- बच्चों की समझ के अनुरूप प्रभावी शिक्षण कार्य के लिए स्वयं को तैयार करना।

- प्रशिक्षु शिक्षकों में विषय वस्तु पर अधिकार और विश्वास के साथ अध्यापन करने की क्षमता का विकास करना।

- कार्यक्रम के दौरान शाला प्रबंधन, समुदाय के साथ कार्य, बच्चों को समझना तथा पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों को समझना एवं प्रभावी शिक्षण हेतु इनकी आवश्यकता को महसूस करने का अवसर देना जिससे विद्यालय, समुदाय तथा बच्चों के बीच आपसी संबंध की समझ विकसित हो सके।

4. 60 दिवसीय शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन कार्यक्रम के लिए अध्ययन केन्द्र में तैयारी :–

अध्ययन केन्द्र में मुख्य रूप से निम्नांकित कार्य किए जाएँ –

क – प्रशिक्षु शिक्षकों द्वारा अब तक किए कार्यों का विश्लेषण :–

विषय प्रवेश हेतु कार्यशाला के एक सत्र में सभी प्रशिक्षु शिक्षकों से उनके ***अनुभवों का प्रस्तुतीकरण निम्न बिन्दुओं पर कराएँ*** **और उनका विश्लेषण करें –**

- **शाला परिचय**
  - (i) ग्रामीण / शहरी
  - (ii) कुल बच्चे व शिक्षक
  - (iii) भौतिक संसाधन (कमरे, पुस्तकालय, टायलेट, पानी का स्त्रोत, खेल का मैदान इत्यादि)
- **शाला अनुभव**
  - (i) कार्यालयीन गतिविधियाँ – किस प्रकार के कार्यालयीन कार्य करने होते हैं?
  - (ii) खेलकूद संबंधी जानकारी – क्या क्या खेल खेले जाते हैं, क्या शिक्षक भी भाग लेते हैं, खेलने के लिए बच्चों को किस प्रकार प्रोत्साहित किया जाता है?
  - (iii) पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप – पढ़ाई लिखाई के अतिरिक्त अन्य क्या क्या गतिविधियां आयोजित की जाती हैं ?
  - (iv) अन्य शालेय गतिविधियाँ
  - (v) समुदाय व उसकी सहभागिता– पालक, एस.एम.सी. की भूमिका क्या होती है?
- **कक्षा–कक्ष प्रक्रिया**
  - (i) शिक्षक क्या करते हैं ?
  - (ii) शिक्षक तैयारी कैसे करते हैं ?
  - (iii) बच्चे कक्षा में क्या करते हैं ?
  - (iv) पाठ पढ़ाने का तरीका क्या होता है ?
  - (v) कक्षा का समग्र वातावरण कैसा होता है ?
  - (vi) शिक्षक बच्चों से क्या क्या बातचीत करते हैं ?
  - (vii) शिक्षक कैसे पता करते हैं कि किस बच्चे को क्या समझ आ रहा है ?
  - (viii) आपको शिक्षकीय कार्य के दौरान क्या–क्या बातें अच्छी लगी व ऐसी कौन सी बातें थी जो अच्छी नहीं लगी व क्यों?

प्रशिक्षु शिक्षकों के प्रस्तुतीकरण के आधार पर अध्ययन केन्द्र पर्यवेक्षक (Mentor) कार्यों का विश्लेषण करेंगे कि इन परिस्थितियों में वे अपनी शाला की समग्र शिक्षण योजना कैसे बना सकते हैं।

ख – तैयारी कार्यक्रम के अन्य सत्रों में प्रशिक्षु शिक्षकों से अध्ययन केन्द्र में निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की जाएगीः–

- 60 दिन की समग्र शिक्षण योजना का निर्माण करना एवं उस पर चर्चा।

❖ बच्चों के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करने के संबंध में

❖ बच्चों के साथ खेलों के आयोजन के संबंध में

❖ विषय वस्तु जिसे आप सिखाना चाहते हैं से संबन्धित महत्वपूर्ण अवधारणओं एवं कठिनाइयों के सम्बन्ध में (इन चर्चाओं के लिए विषय के स्रोत व्यक्तियों का सहयोग लिया जाये।)

❖ कक्षा संचालन कैसे करें, के सम्बन्ध में

❖ बच्चों से किए जाने वाले संभावित सवाल–जवाबों के सम्बन्ध में

❖ बच्चों के कक्षा कार्य तथा गृह कार्य की जाँच के सम्बन्ध में

❖ व्यक्तिगत डायरी/प्रतिवेदन लिखने के सम्बन्ध में

❖ बच्चों व उनके व्यवहार की समझ के सम्बन्ध में

❖ अनुपस्थित बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए किए जा सकने वाले प्रयासों के सम्बन्ध में

❖ शाला में किए जाने वाले कला, साहित्य, सांस्कृतिक कार्यों के सम्बन्ध में

❖ हर बच्चे को सप्ताह में कम से कम तीन चार घण्टे खेलने का अवसर दें व स्वयं भी उनके साथ खेलें

❖ शाला की साफ सफाई, रख रखाव आदि के सम्बन्ध में

❖ शाला में समुदाय व पालकों की भागीदारी के सम्बन्ध में

❖ प्रशिक्षु शिक्षक का आकलन जिन बिन्दुओं पर होना है, अध्ययन केन्द्र के पर्यवेक्षक उन्हें बताएँगे।

❖ 60 दिनों पर आधारित प्रशिक्षु शिक्षकों की मूल्यांकन प्रक्रिया पर चर्चा ताकि प्रशिक्षु शिक्षक 60 दिनों की प्रत्येक गतिविधि को पूरी गंभीरता और सतर्कता से सम्पन्न कर सकें।

टीप 1 – प्रशिक्षु शिक्षक को दो माह यानी 60 दिन की समग्र शिक्षण योजना की मोटी रूपरेखा बनाने में सहयोग करें। इसमें बच्चों के समग्र व्यक्तित्व व जीवन से जुड़ने की कोशिश हो और सभी विषयों, कार्यों, खेलों के बीच समग्र सम्बन्ध बनाने की कोशिश हो।

टीप 2 – दो माह की मोटी रूपरेखा के आधार पर काम शुरू करके प्रशिक्षु एक–एक सप्ताह की मोटी योजना बनाकर काम करता रहे। वह हर दिन योजना की समीक्षा कर अगले दिन की योजना बनाए। इसी तरह हर सप्ताह के कार्य की समीक्षा कर अगले सप्ताह की मोटी रूपरेखा बनाए।

(ग) प्रशिक्षु शिक्षकों को 60 दिवसों में उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य/भूमिका से अवगत कराना

❖ यदि किसी तरह की समस्या हो तो मेंटर तथा विषय विशेषज्ञ से सम्पर्क करें।

❖ प्रशिक्षु शिक्षक स्कूल के बच्चों के साथ कार्य करेंगे व स्वआकलन भी करेंगे।

❖ प्रशिक्षु शिक्षक से यह अपेक्षा होगी कि वह सैद्धान्तिक ज्ञान व अपनी समझ का प्रयोग कर शालेय चुनौतियों का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास करें।

❖ अपनी प्रत्येक सफलता एवं असफलता दैनिक डायरी व साप्ताहिक प्रतिवेदन में लिखें ताकि भविष्य में असफलता को सफलता में बदलने की कहानी स्वयं और दूसरों के लिए प्रेरणा बने।

5. अध्ययन केन्द्र के पर्यवेक्षकों के लिए दिशा निर्देश जिससे कि वे प्रशिक्षु शिक्षकों को उचित मार्गदर्शन दे सकें।

i. अध्ययन केन्द्र का एक स्रोत व्यक्ति प्रत्येक 8 से 10 प्रशिक्षु शिक्षकों के लिए सहयोगी के रूप में मार्गदर्शन देगा। सुविधा अनुसार शाला में जाकर या प्रशिक्षु शिक्षकों द्वारा फोन के माध्यम से या भेंट किये जाने पर उससे चर्चा करेगा।

ii. सभी प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन केन्द्र में रविवार को आयोजित होने वाले आगामी सम्पर्क कार्यक्रम में शालेय चिंतन एवं मनन कार्यक्रम पर फीड बैक दिया जाए। शिक्षक द्वारा जमा किये गए साप्ताहिक प्रतिवेदन व तब तक की दैनिक डायरी को पढ़कर शालेय कार्यो पर चर्चा की जाए।

iii. प्रतिवेदन कैसा लिखा जा रहा है? शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन के अन्त तक प्रशिक्षु शिक्षक एक रिफ्लेक्टिव प्रतिवेदन लिखने में सक्षम हो जाएँ, अतः प्रतिवेदन की रिपोर्ट पर भी उन्हें फीडबैक दें।

iv. 60 दिन बाद प्रशिक्षु शिक्षकों को अपने सभी अभिलेख पूर्ण एवं व्यवस्थित करने हेतु तक सप्ताह का समय दिया जाए तत्पश्चात् आगे उल्लेखित तरीके से उनका मूल्यांकन किया जाए। अभिलेखों की सूची निम्नानुसार है–

(क) 60 दिन के दौरान प्रति सप्ताह जमा होने वाले अभिलेख।

दैनिक योजना व डायरी के मुख्य बिन्दुओं को लेकर तैयार किया गया साप्ताहिक प्रतिवेदन –**10 प्रतिवेदन**

(ख) 60 दिन के अंत में जमा होने वाले अभिलेख

अवलोकन प्रपत्र – निम्न बिन्दुओं पर प्रशिक्षु के अनुभव व समझ को प्रस्तुत करने का अवसर देने के लिए उसे कुछ प्रपत्र भरने का काम करना है। ये प्रपत्र खण्ड 10 में दिए गए हैं – इन्हें भरकर अपने प्रधान पाठक के हस्ताक्षर लेकर प्रशिक्षु इन्हें अध्ययन केन्द्र में जमा करेगा। इनका उपयोग पर्यवेक्षक द्वारा व अध्ययन केन्द्र पर गठित समिति द्वारा प्रशिक्षु के मूल्यांकन के लिए किया जाएगा।

i. शाला की वास्तविक जानकारी

ii. किसी एक शिक्षक की कक्षा का अवलोकन

iii. बच्चों से बातचीत का प्रतिवेदन

iv. गांव/मुहल्ले की सामान्य जानकारी के आधार पर लेख

v. शाला समुदाय का संबंध

vi. बच्चों के खेलो का उपयोग

vii. स्वमूल्यांकन के 5 प्रपत्र

(ग) रिफ्लेक्टिव डायरी

60 दिनांकों की दैनिक शिक्षण डायरी का रजिस्टर

6. प्रधान पाठक के द्वारा मूल्यांकन

60 दिनों के शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन कार्यक्रम के बाद संबंधित शालाओं के प्रधानअध्यापक अपने भरे हुए प्रपत्रों को निर्धारित तिथि तक अध्ययन केन्द्र में प्रेषित करेंगे। अध्ययन केन्द्र सहायक समन्वयक प्रधान अध्यापक एवं मेंटर के सलाह के आधार पर 50 अंकों के लिए प्रशिक्षु शिक्षकों का मूल्यांकन करें।

7. प्रशिक्षु शिक्षकों द्वारा शालाओं में 60 दिवसीय कार्यः–

शालेय कार्य पर चिंतन मनन का मुख्य उद्‌देश्य प्रशिक्षु शिक्षक का शिक्षण कौशल बढ़ाना ही नहीं, अपितु यह है कि बच्चों की विशिष्टता एवं वैयक्तिक अंतर को समझकर एक ऐसी कक्षा का निर्माण करने में उसे सक्षम बनाना जहां सभी को अपने तरीके से सीखने का अवसर प्राप्त हो तथा प्रशिक्षु शिक्षक में यह विश्वास उत्पन्न हो कि सभी बच्चे सीख सकते हैं। उनका मूल्यांकन इन्हीं मापदण्डों पर किया जायेगा।

60 दिवसों में प्रशिक्षु शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले कार्य/भूमिका निम्नांकित होगी –

I. शिक्षण योजना बनाना व क्रियान्वित करना।

II. कक्षा संचालन – शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षण योजना के लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयास किया जायेगा तथा कक्षा की परिस्थितियों के अनुसार शिक्षण योजना में परिवर्तन किया जा सकेगा।

III. प्रशिक्षु के रूप में पढ़ाने के अनुभव तथा स्वमूल्यांकन प्रपत्र भरना।

IV. स्थानीय खेलों की जानकारी प्राप्त कर बच्चों के साथ खेलना। (खेलों के अनुभव रिपोर्ट के रूप में लिखेंगे)

V. सप्ताह के कार्यों पर प्रतिवेदन लिखना एवं शाला के साप्ताहिक बैठक में उस पर चर्चा करना और रविवार अध्ययन केन्द्र में जमा करना। पर्यवेक्षक से उस पर चर्चा करना।

VI. यह सारा काम प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा अपने दैनिक शिक्षकीय कार्य के साथ किया जावेगा।

सप्ताहिक प्रतिवेदन अंतर्गत् निम्न बिन्दुओं पर लेखन अपेक्षित हैं–

- ❖ बच्चों से क्या बातचीत की व उनके विचारों को सुना जाना ?
- ❖ क्या शिक्षण योजना उसी तरह लागू की, जैसा सोचा था ?
- ❖ कक्षा में कौन कौन से महत्वपूर्ण बिन्दु सामने आए ?
- ❖ प्रशिक्षु शिक्षक ने किन तरीकों (गतिविधियों, क्रियाकलापों समेत) के माध्यम से पढ़ाना तय किया था?
- ❖ यदि योजना में बदलाव किया तो क्या और क्यों करना पड़ा।
- ❖ क्या कक्षा अध्ययन के बाद लगता है, कि गतिविधियां उपयुक्त थीं या उनमें परिवर्तन की आवश्यकता थी ?
- ❖ सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी कैसी थी? सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में क्या भाषा बच्चों की समझ में आ रही थी।
- ❖ शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा का माहौल कैसा था? (कौन से बच्चे भाग ले रहे थे, बोल रहे थे। कार्य के बारे में आपस में चर्चा कर रहे थे? कौन से बच्चे भाग नहीं ले रहे थे।
- ❖ शिक्षण प्रक्रिया में श्यामपट का उपयोग हुआ हो तो किस तरह से? श्यामपट के उपयोग का मौका बच्चों को कितनी बार दिया गया।
- ❖ ऐसी कौन सी स्थिति निर्मित हुई जब बच्चे ध्यान नहीं दे रहे थे? या नहीं समझ पा रहे थे? इसके कारणों व समाधान पर आपके विचार क्या हैं?
- ❖ कोई विशेष तथ्य या घटना (उल्लेख करें)
- ❖ आपने इस सप्ताह बच्चों से अन्य शिक्षकों से या पुस्तकों आदि से क्या नया सीखा या जाना।

8. प्रशिक्षु शिक्षकों का मूल्यांकन :

शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन हेतु प्रशिक्षु शिक्षकों के मूल्यांकन की योजना निम्नानुसार होगीः–

मूल्यांकनकर्ता एवं आधार सामग्री	निर्धारित अंक
1. प्रधान अध्यापक की राय पर आधारित मूल्यांकन :– ● प्रशिक्षु शिक्षकों के 60 दिवसों के कार्यों के आधार पर।	कुल अंक 50
2. अध्ययन केन्द्र के पर्यवेक्षक द्वारा – ● प्रशिक्षु शिक्षकों के द्वारा सम्पूर्ण सत्र में किए गए कार्यों के आधार पर ● 60 दिनों के शिक्षण कार्य, बच्चों एवं समुदाय के साथ अंतः क्रिया तथा समस्याओं को पहचानने एवं हल ढूंढ़ने की क्षमता के आधार पर पर्यवेक्षक का आकलन	कुल अंक 50
3. अध्ययन केन्द्र स्तर पर :– ● प्रशिक्षार्थियों द्वारा शालेय चिंतन एवं मनन कार्यक्रम के दौरान किए गए कार्यों का प्रस्तुतीकरण, उनके द्वारा तैयार किए गए प्रतिवेदन एवं उनकी डायरी के आधार पर	कुल 50 अंक

• यह कार्य केन्द्र स्तर पर बनी समिति द्वारा की जावेगी	
कुल अंक	कुल अंक–150

9. मूल्यांकन कैसे करेंगे?

(क) प्रधान अध्यापक/शिक्षक किन–किन बिन्दुओं पर आकलन करेंगे–

i. अध्यापन कार्य

- कक्षा में छात्रों की भागीदारी,
- कितने प्रतिशत बच्चे कक्षा में सीखने सिखाने की प्रक्रिया में पूरी तरह शामिल थे ?
- भाषा का प्रयोग
- विषयवस्तु के बारे में शिक्षक की समझ
- विषयवस्तु सीखने–सिखाने का तरीका
- बच्चों से बातचीत का तरीका
- छात्रों को फीड बैक देने का तरीका
- प्रशिक्षु शिक्षक का कक्षा संचालन
- उपलब्ध सामग्री का अध्यापन में प्रयोग कितना उपयुक्त है ?
- कक्षा प्रबंधन विशेषकर बैठक व्यवस्था पाठ के अनुकूल है या नहीं ?
- बच्चों को अध्यापन में मजा आ रहा है, या नहीं ?
- शिक्षण विधि बच्चों के स्तर के अनुरूप थी या नहीं?
- प्रशिक्षु शिक्षक की कक्षा में स्थानीय परिवेश और भाषा का प्रयोग हो रहा था या नहीं?

ii. नियमितता

iii.पूर्व तैयारी

iv.तारतम्यता/क्रमबद्धता

v.स्वच्छता में योगदान (परिसर, कक्षों, विद्यार्थियों आदि की)

vi.प्रशिक्षु शिक्षक का समुदाय व पालकों से संबंध।

vii.अनुपस्थित बच्चों को पुनः शाला में लाने में उनके प्रयास।

viii.बच्चों के साथ खेलकूद सांस्कृतिक/साहित्यक व अन्य गतिविधियों में भागीदारी।

ix.बच्चों के गृहकार्य एवं कक्षाकार्य की (नोट बुक या कॉपियों की) नियमित जाँच।

मूल्यांकन पत्रक –1

प्रधानाध्यापक/शिक्षक द्वारा प्रशिक्षु शिक्षक का समग्र मूल्यांकन पत्रक

क्र.	मूल्यांकन के बिन्दु	ग्रेड	प्रधानाध्यापक की संक्षिप्त टीप, (ग्रेड देने का कारण)
1	प्रशिक्षु शिक्षक की शाला–कक्षा में समय पर एवं नियमित उपस्थिति		
2	शिक्षण योजना की पूर्व तैयारी तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन		
3	शिक्षण विधि तथा गतिविधियों का चुनाव–पूर्व दिवस के साथ तारतम्यता एवं क्रमबद्धता		
4	शिक्षण सामग्री का उपयोग		
5	कक्षा में बच्चों की भागीदारी बच्चों के साथ खेलकूद व सांस्कृतिक, साहित्यिक गतिविधियों में भागीदारी		
6	स्वच्छता; शाला वातावरण एवं कक्षा के वातावरण में योगदान		
7	प्रशिक्षु शिक्षक का समुदाय से सम्बंध		
8	शाला में अनुपस्थित – अनियमित बच्चों को नियमित करने में प्रशिक्षु शिक्षक का प्रयास		
9.	कक्षा प्रबंधन विशेषकर बैठक व्यवस्था का कार्य के अनुरूप होना		
10	बच्चों के गृहकार्य एवं कक्षा कार्य की नियमित जाँच		
संचयी ग्रेड			

हस्ताक्षर प्रधान अध्यापक

टीपः– प्रत्येक क्षेत्र के लिए अधिकतम 5 अंक निर्धारित हैं। प्रधान पाठक/शिक्षक, प्रशिक्षु शिक्षक के समग्र क्रियाकलापों को देखकर इन क्षेत्रों में 1 से लेकर अधिकतम 5 अंकों के आधार पर क्रमशः E,D,C,B एवं A ग्रेड प्रदान कर मूल्यांकन करेंगे। वे प्रपत्र 8 की सहायता से अलग–अलग समय पर 5 बार प्रशिक्षु पर अपना अवलोकन दर्ज करेंगे। इन 5 अवलोकनों के आधार पर मूल्यांकन पत्रक में ग्रेड देंगे।प्रधान अध्यापक द्वारा यह ग्रेड प्रशिक्षु शिक्षक के सम्पूर्ण शालेय कार्य पर चिंतन एवं मनन कार्यक्रम के दौरान किए गए कार्यों के आधार पर किया जावेगा।

ख) अध्ययन केन्द्र के शिक्षक प्रशिक्षक/पर्यवेक्षक द्वारा मूल्यांकन 50 अंक हेतु –

अध्ययन केन्द्र के शिक्षक प्रशिक्षक/पर्यवेक्षक द्वारा प्रशिक्षु शिक्षक के क्रियाकलापों की प्रस्तुतिका मूल्यांकन निम्न क्षेत्रों को ध्यान में रखकर किया जाएगा –

मूल्यांकन पत्रक –2

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम : ....

क्र.	मूल्यांकन के बिन्दु	अंक	प्राप्तांक	विशेष टीप
1	प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा प्रस्तुत किए गए साप्ताहिक प्रतिवेदन की रिपोर्ट के आधार पर	5		
2	प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा तैयार समग्र शिक्षण योजना	10		
3	समग्र शिक्षण योजना के अनुरुप अध्यापन कार्य तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन	10		
4	कक्षा व शाला में प्रशिक्षु शिक्षक का व्यवहार एवं भागीदारी तथा बच्चों की समझ के विषय में प्रशिक्षु द्वारा लिखे गए रिफ्लेक्टिव डायरी के आधार पर।	10		
5	बच्चों के खेल, सामुदायिक सहभागिता, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ किया गया कार्य के सम्बन्ध में प्रशिक्षु शिक्षक से चर्चा एवं प्रतिवेदन के आधार पर	15		
योग		50		

हस्ताक्षर शिक्षक प्रशिक्षक/पर्यवेक्षक

ग) अध्ययन केन्द्र स्तर पर मूल्यांकन 50 अंकों के लिए

यह मूल्यांकन **अध्ययन केन्द्र** पर गठित समिति द्वारा निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर किया जावेगा–

मूल्यांकन पत्रक–3

1. प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा अपने किए गए कार्य का प्रस्तुतीकरणः कुल 50 अंक

- कार्य की समझ (प्रशिक्षु शिक्षक के शिक्षकीय कार्य) **5 अंक**
- बच्चों के बारे में समझ **5 अंक**
- बच्चों को सिखाने में शिक्षण योजना का महत्व **5 अंक**
- विषय की स्पष्टता (भाषा एवं गणित विषय) **5 अंक**

2. प्रशिक्षु शिक्षक से सवाल–जवाब 10 **अंक**

3. 60 शिक्षण दिवस का कार्य प्रतिवेदन **20 अंक**

10. प्रशिक्षु द्वारा भरे जाने वाले प्रपत्र

प्रपत्र 1

शाला की वास्तविक जानकारी

1. शाला का नाम :–...
2. प्रधान पाठक का नाम :–...
3. शाला में कार्यरत शिक्षकों की संख्या :– ....
4. कक्षावार दर्ज संख्या :– ....

कक्षा	बालक	बालिका	अ.जा.	अ.ज.जा.	अ.पि.वर्ग	सामान्य	गत माह बच्चों की औसत उपस्थिति
1							
2							
3							
4							
5							

5. शाला की समय सारिणी (पृथक से संलग्न करें)

6. बच्चों की पृष्ठभूमि जैसे–
   - कितने बच्चे श्रमिक परिवार से हैं ?
   - कितने बच्चे नौकरी पेशा वर्ग के हैं ?
   - कितने बच्चे व्यापारी वर्ग के हैं ?
   - कितने बच्चों के पालक पढ़े–लिखे हैं ?

7. शाला भवन :– कच्चा / पक्का

8. शाला में कमरे :– दो / तीन / अधिक

9.. शाला में खिड़की दरवाजे सही सलामत हैं या नहीं?

10. शाला के ब्लैक बोर्ड (संख्या / आकार एवं स्थिति) डस्टर एवं चॉक की उपलब्धता

11. बच्चों के बैठने के लिए फर्नीचर /टाटपट्टी

12. प्रधानाध्यापक का कमरा / स्टाफ रूम / ऑफिस

13. शिक्षकों हेतु कुर्सी टेबल की स्थिति

14. शाला में बिजली एवं पंखे की व्यवस्था।

15 पानी की व्यवस्था नल / बोरिंग या अन्य, पानी पीने की व्यवस्था गिलास आदि।

16. शौचालय की स्थिति

17. मध्यान्ह भोजन बनाने हेतु अलग से कमरा।

18. मध्यान्ह भोजन बनाने हेतु आवश्यक बर्तन।

19. मध्यान्ह भोजन करने हेतु बर्तन ।

20. शालेय अभिलेखों हेतु पेटी/आलमारी।

21. शाला में उपलब्ध अभिलेखों की सूची। (पृथक से संलग्न करें)

22. शाला में बाउण्ड्रीवाल अथवा घेरा।

23. शाला में वृक्षारोपण, उद्यान।

24. शाला में खेल का मैदान एवं खेल सामग्री

25. शाला में सहायक शिक्षण सामग्री की स्थिति।

26. शाला में स्वच्छता, छात्रों के द्वारा या चपरासी की व्यवस्था।

27. शाला में बाल–पुस्तकालय की स्थिति एवं छात्रों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग

28. प्रार्थना एवं बाल–सभा के आयोजन पर टीप।

29. क्या अभिभावक/गाँव के लोग किसी उद्देश्य को लेकर शाला में आते हैं।

30. जब बच्चे पढ़ नहीं रहे होते हैं तो खाली समय का उपयोग कैसे करते हैं ?

हस्ताक्षर
प्रशिक्षु शिक्षक

प्रपत्र–2

कक्षा अवलोकन

(किसी एक शिक्षक के कक्षा का अवलोकन कर निम्न बिन्दुओं पर प्रतिवेदन बनावें)

1. दिनांक .... कक्षा .... शिक्षक ....
2. विषय / पाठ ....

प्रशिक्षु शिक्षक निम्न बिन्दुओं के आधार पर कक्षा प्रारंभ से अंत तक का अवलोकन विवरण देंगेः–

1. शिक्षक ने कक्षा की शुरूआत कैसे की ?
2. क्या पढ़ाया?
3. कैसे पढ़ाया?
4. बच्चों की भागीदारी
5. बच्चे कब रुचि ले रहे थे, कब दूसरे काम करने लगे, अथवा कब शरारत करने लगे ?
6. शिक्षक ने बच्चों से क्या क्या पूछा / बातचीत की
7. बच्चों द्वारा दिए गए जवाब एवं पूछे गए प्रश्न
8. शिक्षक और बच्चे आपस में तथा बच्चे एक–दूसरे से किस भाषा में बात कर रहे थे?
9. श्यामपट का इस्तेमाल किस प्रकार हो रहा था?

10. कक्षा का समापन कैसे हुआ?

हस्ताक्षर

विशेष टीप :–

1. क्या–क्या बातें बच्चों को समझ नहीं आई ?

2. क्या कठिनाइयाँ आई (सिखाने में एवं सीखने में) ?

3. शिक्षक ने बच्चों की समझ को कैसे जाँचा ?

4. आपने अवलोकन द्वारा क्या सीखा ?

5. आपके सुझाव एवं सुझाव के पक्ष में तर्क

हस्ताक्षर
प्रशिक्षु शिक्षक

प्रपत्र–3
बच्चों से बातचीत

(शाला लगने से पूर्व, अवकाश में एवं खेल के मैदान में बच्चों से निम्न बिंदुओं पर बातचीत की जा सकती है। कम से कम 15 बच्चों से बातचीत कर एक प्रतिवेदन तैयार करें।)

1. बच्चों को शाला कैसी लगती है ?
2. क्या शाला में आना अच्छा लगता है? यदि हाँ/नहीं तो क्यों ?
3. उनके मनपसंद शिक्षक कौन हैं? और क्यों ?
4. उनकी कौन सी बातें अच्छी लगती हैं ?
5. गणवेश में आना पसंद है ?
6. उनकी मनपसंद पुस्तक कौन सी है? क्यों है ?
7. उनके मित्रों के विषय में पूछ सकते हैं।
8. उनके मनपसंद खेल के बारे में पूछ सकते हैं।
9. शाला से उनका घर कितनी दूर है? वे शाला कैसे आते हैं ?
10. भविष्य में वे क्या–क्या करना चाहते हैं ?

हस्ताक्षर
प्रशिक्षु शिक्षक

प्रपत्र–4

गाँव / मोहल्ला की सामान्य जानकारी

1. गाँव / मोहल्ला का नाम :– ....
2. विकासखण्ड का नाम :–..
3. जिले का नाम :– ....
4. गाँव / मोहल्ला की जनसंख्या :–..
5. गाँव / मोहल्ला में साक्षरता की स्थिति :–...
6. गाँव / मोहल्ला की सड़कों की स्थिति (आवागमन)
7. आवागमन का साधन
8. पेय जल की सुविधा
9. गाँव / मोहल्ला में रोजगार की स्थिति (कृषि / व्यवसाय इत्यादि)
10. अन्य आर्थिक संसाधन
11. गाँव / मोहल्ला में शाला की स्थिति, (प्राथ.,माध्य.हाईस्कूल, हायर सेकेण्डरी, आंगनबाड़ी)
12. गाँव / मोहल्ला में संचालित स्व–सहायता समूह एवं उनके कार्य
13. गाँव / मोहल्ला में ग्राम पंचायत की स्थिति (आश्रित)
14. सरपंच / नगर पंचायत अध्यक्ष का नाम
15. गाँव में चिकित्सा की सुविधा
16. गाँव / मोहल्ला में बाजार की स्थिति

17. गाँव / मोहल्ला में बिजली, दूर संचार की व्यवस्था

18. गाँव में धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों की स्थिति

19. ग्रामीण शौचालय की सुविधा

20. उचित मूल्य की दुकान

21. बाजार गाँव से दूर है या करीब

22. गाँव / मोहल्ला वालों की मद्यपान, गुड़ाखू, बीड़ी, गुटखा, तम्बाकू आदि सेवन की आदतें

उपरोक्त जानकारी के आधार पर गांव / मोहल्ला जहां शाला स्थित है, के बारे में एक लेख तैयार करें।

हस्ताक्षर
प्रशिक्षु शिक्षक

प्रपत्र–5
शाला एवं समुदाय का संबंध

1. शाला का नाम :–
2. विकासखण्ड का नाम :–
3. जिला :–
4. शाला प्रबंधन समिति के गठन का विवरण :–
5. शाला प्रबंधन समिति की बैठकों का विवरण
6. शाला प्रबंधन समिति की उल्लेखनीय गतिविधियाँ
7. शाला विकास हेतु समुदाय व पालकों की सहभागिता/सहयोग संबंधी जानकारी

   (अ) भवन विकास हेतु

   (ब) खेलकूद सामग्री प्रदाय हेतु

   (स) शाला पुस्तकालय विकास हेतु

   (द) फर्नीचर हेतु

8. शाला में छात्रों के प्रवेश, उपस्थिति, एवं नियमित अध्यापन सुनिश्चित करने हेतु समाज/पालकों से प्राप्त सहयोग का विवरण

9. सांस्कृतिक/खेलकूद कार्यक्रमों के आयोजन में समाज की सहभागिता का विवरण।

10. साक्षरता/पर्यावरण अवचेतना संबंधी कार्यक्रमों का विवरण एवं उनमें समाज की सहभागिता की जानकारी

11. शैक्षिक गुणवत्ता/अनुशासन स्थापित करने हेतु समाज के व्यक्तियों के समय–समय पर शाला में आने का विवरण एवं उनके सुझाव की जानकारी।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर शाला एवं समुदाय के सम्बंधों पर अपने विचार लिखें।

हस्ताक्षर प्रशिक्षु शिक्षक

प्रपत्र – 6
बच्चों के स्थानीय खेलों का उपयोग

1. बच्चों के स्थानीय खेलों की सूची

2. बच्चों का आयु समूह तथा शाला में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर खेलों का चयन

3. खेल सम्बंधित कार्य–योजना, समय सारणी में स्थान (हर बच्चे को सप्ताह में कम से कम 3–4 घंटे खेल–खेलने का अवसर दें।)

4. खेलों के दौरान बच्चों की प्रतिक्रिया

5. खेल खिलाने की गतिविधि, बच्चों के साथ घुलने–मिलने में कितनी सहायक सिद्ध हुई?

6. क्या आप स्वयं भी बच्चों के साथ मिलकर खेले थे ?

7. खेल खिलवाने से बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में क्या फर्क दिखा ?

नोट :– खेल चयन करने के लिए अच्छा हो कि प्रशिक्षु शिक्षक कक्षा के बच्चों से ही पूछे कि वे क्या खेलना चाहते हैं ? वह खेल कैसे खेला जाता है?

....

हस्ताक्षर प्रशिक्षु शिक्षक

(एक प्रशिक्षु शिक्षक के रूप में ऐसे कुल पांच प्रपत्र तैयार करें प्रत्येक प्रपत्र प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा सोची गई एक इकाई के समाप्त होने पर भरा जावे)

स्वमूल्यांकन प्रारूप प्रपत्र – 7 (प्रथम)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....

विद्यालय का नाम ....

कक्षा .... विषय ....प्रकरण............................

दिनांक ....से...........................तक उपस्थिति के बारे में टीप –

आकलन के बिन्दु–

1. क्या सिखाना चाहते थे? कौन सी अवधारणाएँ स्पष्ट करने की योजना थी (संक्षेप में लिखें)?

2. क्या तरीका सोचा था (संक्षेप में लिखें)?

3. कौन सी सामग्री व गतिविधियां आपकी योजना का हिस्सा थे (विवरण दें)।

4. विषय वस्तु से संबंधित गतिविधियाँ, जो छात्रों को कक्षा में करवाई गईं (विवरण दें)।

5. क्या सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा आपने सोचा था, यदि नहीं हुआ तो क्यों?

6. क्या बच्चों के सीखने की प्रगति से आप संतुष्ट हैं?

7. आप अपने अध्यापन को कौन सा ग्रेड देना चाहेंगे (A,B,C,D एवं E क्रमशः अति उत्तम से बहुत खराब हैं)

हस्ताक्षर प्रशिक्षु शिक्षक

(एक प्रशिक्षु शिक्षक के रूप में ऐसे कुल पांच प्रपत्र तैयार करें प्रत्येक प्रपत्र प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा सोची गई एक इकाई के समाप्त होने पर भरा जावे)

स्वमूल्यांकन प्रारूप प्रपत्र – 7 (द्वितीय)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....

विद्यालय का नाम ....

कक्षा .... विषय ....प्रकरण..........................

दिनांक ....से...........................तक उपस्थिति के बारे में टीप –

आकलन के बिन्दु–

1. क्या सिखाना चाहते थे? कौन सी अवधारणाएँ स्पष्ट करने की योजना थी (संक्षेप में लिखें)?

2. क्या तरीका सोचा था (संक्षेप में लिखें)?

3. कौन सी सामग्री व गतिविधियां आपकी योजना का हिस्सा थे (विवरण दें)।

4. विषय वस्तु से संबंधित गतिविधियाँ, जो छात्रों को कक्षा में करवाई गईं (विवरण दें)।

5. क्या सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा आपने सोचा था, यदि नहीं हुआ तो क्यों?

6. क्या बच्चों के सीखने की प्रगति से आप संतुष्ट हैं?

7. आप अपने अध्यापन को कौन सा ग्रेड देना चाहेंगे (A,B,C,D एवं E क्रमशः अति उत्तम से बहुत खराब हैं)

हस्ताक्षर प्रशिक्षु शिक्षक

(एक प्रशिक्षु शिक्षक के रूप में ऐसे कुल पांच प्रपत्र तैयार करें प्रत्येक प्रपत्र प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा सोची गई एक इकाई के समाप्त होने पर भरा जावे)

स्वमूल्यांकन प्रारूप प्रपत्र – 7 (तृतीय)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....

विद्यालय का नाम ....

कक्षा .... विषय ....प्रकरण..........................

दिनांक ....से..........................तक उपस्थिति के बारे में टीप –

आकलन के बिन्दु–

1. क्या सिखाना चाहते थे? कौन सी अवधारणाएँ स्पष्ट करने की योजना थी (संक्षेप में लिखें)?

2. क्या तरीका सोचा था (संक्षेप में लिखें)?

3. कौन सी सामग्री व गतिविधियां आपकी योजना का हिस्सा थे (विवरण दें)।

4. विषय वस्तु से संबंधित गतिविधियाँ, जो छात्रों को कक्षा में करवाई गईं (विवरण दें)।

5. क्या सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा आपने सोचा था, यदि नहीं हुआ तो क्यों?

6. क्या बच्चों के सीखने की प्रगति से आप संतुष्ट हैं?

7. आप अपने अध्यापन को कौन सा ग्रेड देना चाहेंगे (A,B,C,D एवं E क्रमशः अति उत्तम से बहुत खराब हैं)

हस्ताक्षर प्रशिक्षु शिक्षक

(एक प्रशिक्षु शिक्षक के रूप में ऐसे कुल पांच प्रपत्र तैयार करें प्रत्येक प्रपत्र प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा सोची गई एक इकाई के समाप्त होने पर भरा जावे)

स्वमूल्यांकन प्रारूप प्रपत्र – 7 (चतुर्थ)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....

विद्यालय का नाम ....

कक्षा .... विषय ....प्रकरण..........................

दिनांक ....से...........................तक उपस्थिति के बारे में टीप –

आकलन के बिन्दु–

1. क्या सिखाना चाहते थे? कौन सी अवधारणाएँ स्पष्ट करने की योजना थी (संक्षेप में लिखें)?

2. क्या तरीका सोचा था (संक्षेप में लिखें)?

3. कौन सी सामग्री व गतिविधियां आपकी योजना का हिस्सा थे (विवरण दें)।

4. विषय वस्तु से संबंधित गतिविधियाँ, जो छात्रों को कक्षा में करवाई गईं (विवरण दें)।

5. क्या सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा आपने सोचा था, यदि नहीं हुआ तो क्यों?

6. क्या बच्चों के सीखने की प्रगति से आप संतुष्ट हैं?

7. आप अपने अध्यापन को कौन सा ग्रेड देना चाहेंगे (A,B,C,D एवं E क्रमशः अति उत्तम से बहुत खराब हैं)

हस्ताक्षर प्रशिक्षु शिक्षक

(एक प्रशिक्षु शिक्षक के रूप में ऐसे कुल पांच प्रपत्र तैयार करें प्रत्येक प्रपत्र प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा सोची गई एक इकाई के समाप्त होने पर भरा जावे)

स्वमूल्यांकन प्रारूप प्रपत्र – 7 (पंचम)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....

विद्यालय का नाम ....

कक्षा .... विषय ....प्रकरण..........................

दिनांक ....से..........................तक उपस्थिति के बारे में टीप –

आकलन के बिन्दु–

1. क्या सिखाना चाहते थे? कौन सी अवधारणाएँ स्पष्ट करने की योजना थी (संक्षेप में लिखें)?

2. क्या तरीका सोचा था (संक्षेप में लिखें)?

3. कौन सी सामग्री व गतिविधियां आपकी योजना का हिस्सा थे (विवरण दें)।

4. विषय वस्तु से संबंधित गतिविधियाँ, जो छात्रों को कक्षा में करवाई गईं (विवरण दें)।

5. क्या सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा आपने सोचा था, यदि नहीं हुआ तो क्यों?

6. क्या बच्चों के सीखने की प्रगति से आप संतुष्ट हैं?

7. आप अपने अध्यापन को कौन सा ग्रेड देना चाहेंगे (A,B,C,D एवं E क्रमशः अति उत्तम से बहुत खराब हैं)

हस्ताक्षर प्रशिक्षु शिक्षक

प्रपत्र – 8
दैनिक शिक्षण योजना व डायरी लेखन के बिन्दु

शाला का नाम ....प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....

कक्षा ....

1. दिनांक
2. क्या सिखाएँगे,करेंगे, खेलेगें (कौशल जो विकसित किए जायेंगे/उद्देश्य)

3. कैसे सिखाएँगे,करेंगे,खेलेगें (गतिविधि/ शिक्षण विधि) कितने समूह बनाएंगे और क्यों

4. सहायक सामग्री जो उपयोग करेंगे

5. किन–किन बच्चों ने क्या सीखा,किया, खेला

6. किन–किन बच्चों ने प्रयास नहीं किया

7. कठिनाई व उसके कारण

8. अगले दिन योजना में क्या परिवर्तन होगा।

हस्ताक्षर प्रशिक्षु शिक्षक

दैनिक डायरी में खेल की रिपोर्ट के लिए कुछ बिन्दु

खेल की रिपोर्ट को प्रशिक्षु शिक्षक भरेंगे। प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा कक्षा में स्थानीय खेल खिलवाये जाएँगे जिसके द्वारा छात्रों को अनौपचारिक माहौल मिल सकेगा तथा प्रशिक्षु शिक्षक एवं बच्चों को परस्पर एक–दूसरे को समझने में मदद मिलेगी।

दिनांक ....समय...

भागीदारी (बच्चों की संख्या)..

भागीदारी शिक्षकों की ....

खेल का नाम ....

खेल का चुनाव कैसे किया? (चुनाव के आधार)..................................

किसने चुनाव में भागीदारी की? ....

<u>खेल के अनुभव</u>

खेल कैसे खेले?

खेल कितनी देर खेले?

खेल खेलने वालों का उत्साह

खेलने में आनंद

क्या खेल में कोई समस्या आई ? (आपसी विवाद/असहमति आदि)

असहमतियों को बच्चों ने कैसे सुलझाया ?

खेल की विशेषता क्या थी?

क्या आप को आनंद आया?

हस्ताक्षर प्रशिक्षु शिक्षक

एक अध्यापक की डायरी के कुछ पन्ने

हेमराज भट्ट

An Azim Premji University Publication

8 अगस्त, 2007

आज ठीक सवा सात बजे स्कूल पहुँचा। आज सुना कि क्षेत्र में बी.ई. ओ. और डिप्टी बी.ई.ओ. आए हुए हैं तो उनका भी इतंजार रहा। वैसे आजकल 8:30 से पढ़ाई शुरू होती ही है आज अधिकारियों के आने की सूचना के चलते आठ बजे तक प्रार्थना करवा ली थी। हालाँकि प्रार्थना में पूरे बच्चे नहीं आए थे परंतु कक्षा में बैठते बैठते सभी बच्चे आ गए थे आज की उपस्थिति 45/63 थी परंतु बिना नामांकन और विद्याकेंद्र के बच्चों सहित कुल उपस्थिति 58 थी।

आज कक्षा चौथी और पाँचवीं के बच्चों को हिंदी में दो समूहों में बाँटा। पहले समूह में वे बच्चे जो ठीक से पढ़ पा रहे हैं या शब्द तो पढ़ लेते हैं परंतु वाक्य पढ़ने में कठिनाई महसूस करते हैं या अटक–अटक कर पढ़ रहे हैं। दूसरे समूह में वे बच्चे जो केवल वर्ण पहचानते हैं या केवल छोटे – छोटे शब्द पढ़ पा रहे हैं। दोनों कक्षा के 20 बच्चों में से 10 बच्चे ग्रुप 1 में और 10 बच्चे दूसरे ग्रुप के योग्य निकले। पहले ग्रुप को आज कक्षा चार की हिंदी की पाठय् पुस्तक से दूसरे पाठ का अनुकरण वाचन कराया और पहले चार अनुच्छेद के कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर बच्चों से लिखवाया।
दूसरे समूह को टी.एल.एम. के रूप में तैयार एक सौ तीस शब्दों की सूची का मौन वाचन कराया। कक्षा चार और पाँचवीं में आज हिंदी में पहले पीरियड में इतना ही कार्य हो पाया।

दूसरे पीरियड में कक्षा तीन के बच्चों को गणित में दो समूहों में बाँटा। पहला जिन्हें 100 तक की गिनती पहचाननी आती है और दूसरे समहू में वे जिन्हें बिल्कुल भी गिनती पहचाननी नहीं आती है या 50 से कम तक पहचाननी आती है इस कक्षा में पहले समूह को बिना हासिल के जोड़ का अभ्यास कराया और दूसरे समूह को गिनती पहचानने का अभ्यास कराया। संख्या पहचानने में अभी बच्चों के साथ खासी मशक्कत करनी पड़ रही है। इकाई और दहाई की पहचान कराने के बाद भी बच्चे अभी 100 तक की संख्याओं को नहीं पहचान पा रहे हैं। पहले समूह के बच्चे जोड़ की अवधारणा समझ रहे हैं। वे या तो संख्याओं को स्थानीय मान के अनुसार लिखने में गलती करते हैं या चिह्न को बनाने में।

कक्षा तीन के बच्चों के साथ संख्या पहचान की गतिविधियाँ यद्यपि कक्षा के स्तर से बहुत पीछे के क्रियाकलाप हैं परंतु बुनियादी अवधारणाओं को स्पष्ट कराने से पहले आगे बढ़ना ठीक नहीं होगा।

आज बच्चों से पूरी तरह से जुड़ने के बाद मैं महसूस कर रहा हँ कि मैंने लोकेष्णा के लालच में बच्चों से दूर रहकर उनका कितना बडा नुकसान किया है।

अभी तक मैं कक्षा 3, 4, और 5 के बच्चों के साथ हिंदी और गणित में काम कर पा रहा हूँ। कक्षा एक और दो के बच्चों के बीच मैं अभी बैठा ही नहीं हूँ। उन्हें बिंदुलेश और केदारी पारपंरिक तरीके से पढ़ा रही हैं और वे भी उनके साथ एक तरह से जूझ रही हैं। मल्टीग्रेड टीचिंग से मैं अभी तक सहमत नहीं हो पा रहा हूँ। शौकिया तौर पर या एक–दो दिन के लिए वह किसी सीमा तक प्रासंगिक हो सकती है पर अगर एक कक्षा में अनेक कक्षाएँ हो तो मल्टीग्रेड टीचिंग सरासर बेमानी चीज है। आज कक्षा चार–पाँच में पहले ग्रुप को कक्षा चौथी की हिंदी के दूसरे पाठ का अनुकरण वाचन कराने में पूरा आधा घंटा बीत गया। ऐसे में और कक्षाओं को भी देखना यदि सभंव भी हो तो उनके साथ ऐसा कुछ करना कि वे कक्षा स्तर से सीखते भी जाएँ, मैं एक कठिन और थकाऊ क्रियाकलाप मानता हूँ।

आज मध्यातंर के बाद बच्चों की फरमाइश पर स्वतंत्रता दिवस की तैयारी कराई। सारे बच्चों को बरामदे में एक साथ बिठाया और उन्होंने अपनी–अपनी इच्छा से गीत कविता और लोक गीत सनुाए। कुछ लड़कियों ने नृत्य किया। ठीक एक बजे छुट्टी की। 10 अगस्त, 2007 आज न्याय पंचायत कायार्लय में मासिक बैठक थी। मैं पहले 7:15 पर विद्यालय पहुँचा। विद्यालय में चार–पाँच बच्चे पहुँचे थे। मैंने कार्यालय खोला, चाभी बच्चों को दी और बच्चों ने फुर्ती से कमरे साफ किए। मैंने बच्चों को पंक्ति में खड़े होने और प्रार्थना करने को कहा। बच्चों ने प्रार्थना की, मैं भी प्रार्थना स्थल पर बच्चों के साथ खड़ा रहा। प्रार्थना होते – होते 35 से अधिक बच्चे स्कूल पहुँच गए थे।

आजकल सवेरे का स्कूल है और अधिकांश बच्चे दो से पाँच किलोमीटर तक पैदल चलकर स्कूल आते हैं। अक्सर बच्चे आठ बजे तक पहुँच पाते हैं। मैं उनकी स्थानीय परिस्थितियों से परिचित हूँ इसलिए देर से आने के लिए उन्हें डाँटता नहीं हूँ। प्रार्थना के बाद बच्चों को कमरे में न बिठाकर मैंने उनकी छुट्टी कर दी क्योंकि मुझे मीटिंग में जाना है। सड़क पर आते – आते रास्ते में भोजन माता मिल गई उसे, आज बच्चों की छुट्टी कर दी है यह बताकर और भोजन न बनाने और कल के लिए पानी भर कर रख देने का

निर्देश देकर मैं मीटिंग में चला गया। पौने नौ बजे के लगभग मैं एन.पी.आर.सी. पहुँचा। वहाँ केवल एन.पी.आर.सी. समन्वयक उपस्थित थे। आज मुझे टेलीफोन का बिल और एल.आई.सी. की किश्तें जमा कराने उत्तरकाशी जाना था इसलिए मैंने विद्यालय की सूचनाएँ समन्वयक के पास जमा कराईं और उत्तरकाशी चला गया। वास्तव में आज के दिन का उपयोग अपने निजी काम पूरे करने के लिए करना चाहता था। मीटिंग में आना भी आवश्यक है और वहाँ कुछ सार्थक होता हो ऐसा तो बिल्कुल भी नहीं है। समन्वयक लोग पूरी तरह से डाकियों की भूमिका में आ गए हैं। इस बैठक में समन्वयक कुछ सूचनाएँ देता है और कुछ लेता है बस। कुछ ऐसी बहसें होती हैं जिनका कोई सिर–पैर नहीं होता। अपनी कुशलक्षेम होती है। स्थानातंरण और पे स्केल पर बात होती है और घंटा–दो घंटा बरबाद करने के बाद लोग घर चले जाते हैं।स्कूल से छुट्टी पाने का यह निर्बाध दिवस होता है। कभी–कभी तो ऐसा होता है कि समन्वयक किसी के पास संदेश भिजवा देता है कि मीटिंग 10 तारीख के बजाय 12 या 14 तारीख को होगी। पर लोग पहले दिन भी आते हैं और दूसरे दिन भी। और कभी–कभी समन्वयक महोदय नहीं आतें हैं तो फिर नहीं आते उनसे कोई नहीं पूछता कि उन्होंने क्यों अध्यापकों के दो दो दिन बरबाद किए। अधिकांश अध्यापक अपनी सूचनाएँ वहीं पर तैयार करते हैं अगर किसी सूचना के आवश्यक आँकड़े कोई स्कूल से नहीं लाया तो उसे वहीं भिड़ा लिया जाता है। हमारे समन्वयक महोदय इस काम में खासे माहिर हैं वे कोहॉर्ट, एम.डी.एम. और कोटिकरण तक की रिपार्ट स्वयं बना लेते हैं बस उन्हें संबंधित विषय के फॉर्मेट पर प्रधानाध्यापक के हस्ताक्षर और मुहर चाहिए होती है अभी पिछले सत्र में कोटिकरण को लेकर उन्होनें मुझे कहा था कि, 'आप अपने स्कूल के बच्चों की परीक्षा लेकर अंकसूची मुझे दे देना और अपने स्कूल को सी ग्रेड में दिखा देना।' तो ऐसी मीटिंग का लाभ उठाकर मैंने आज जिला मुख्यालय के कार्य निबटाए। फोन का बिल जमा किया, जीवन बीमा की किस्तें जमा करवाई दो टीसियों पर काउंटर साइन करवाने थे पर आज अपर जिला शिक्षा अधिकारी माननीय शिक्षा मंत्री की अगवानी में गए थे। इसलिए टी.सी. उन्हीं के कार्यालय में छोड़नी पड़ी। उत्तरकाशी पहुँचते ही पहले सौरभ राय जी और फिर अनंत सर का फोन आया। सौरभ जी ने 15 से 17 अगस्त तक देहरादून में आयोजित फीडबैक कार्यशाला में अनऑफिशियली प्रतिभाग करने का आमंत्रण दिया और अनंत सर ने संक्षेप में कार्यशाला का उद्देश्य बताया। उन्होंने कुछ और शिक्षकों के नाम सुझाने को कहा तो मुझे केवल यमुना अवस्थी का नाम ध्यान आया। यमुना प्रसाद जी को मैंने भी फोन किया और उन्हें इस कार्यशाला में प्रतिभाग करने का निमत्रंण दिया।

वापसी में युगवाणी पत्रिका खरीदी और उसमें खास रस्किन बॉण्ड का संस्मरण, नई पाठ्य पुस्तकों पर सीताराम बहगुणा का आलेख, आजादी की लड़ाई में पहाड़ी महिलाओं की भूमिका पर जी.सी. जोशी का आलेख और पंकज बिष्ट की कहानी 'घर' पढी। युग वाणी अच्छी सामग्री छाप रही है। धौतरी वापस आते ही एस.सी.ई.आर.टी. से पाठ्यपुस्तक लेखन कार्यशाला में प्रतिभाग करने के मानदेय स्वरूप दो हजार चार सौ पिचहत्तर रुपए का ड्राफ्ट मिला। रात 8:30 अपर निदेशक जी को इस के प्रति आभार पत्र टाइप किया जिसे कल प्रिंट आउट करूँगा। 9:00 रात्रि से 10:30 रात्रि तक यह डायरी लिखी और साथ में गुलाम अली की गज़लें भी सुनता रहा। अभी आधा पौन घंटा कादंबिनी का अगस्त अंक पढ़ूँगा और फिर सोऊँगा।

22 अगस्त, 2007

आज नौ दिवसीय प्रशिक्षण में एम.टी. के रूप में प्रतिभाग करने के बाद अपने विद्यालय में गया और ठीक साढ़े सात बजे उपस्थित हुआ।

आज रोजे की तरह दोनों स्वयं सेविका बिंदुलेश और केदारी उपस्थित थीं। केदारी आज नौ बजे स्कूल से चली गई थी उसे आँगनवाड़ी में सहायिका के पद पर आवेदन जमा करना था और वह अपना आवेदन जमा करने ब्लॉक मुख्यालय डूंडा चली गई। आज मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था और मैंने कोई कक्षा नहीं ली। केदारी ने जाने से पूर्व कक्षा चौथी और पाँचवीं में पढ़ने के अभ्यास पर निर्मित टी.एल.एम. में कुछ अभ्यास कराया। जिसमें निर्मित अभ्यास में से फूलों के नाम, फलों के नाम, जानवरों के नाम और खानेवाली चीजों के नाम ढूँढ़ कर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखने थे। बच्चों ने आधे अभ्यास किए। तब तक संस्कृत का पीरियड शुरू हो गया। बिमला ने संस्कृत में पढ़ने का अभ्यास कराया। आज स्कूल में शिवदत्त जी आए थे जो चाइल्ड फ्रैंडली का कार्य कर रहे हैं। उन्हें एडवांस के रूप में दो हजार रुपए दिए। 26 तारीख तक उन्हें एक हजार रुपए और देने हैं। आज शिक्षण कार्य प्रभावी नहीं हो पाया। मैने तो एक भी कक्षा नहीं ली। छुट्टी के बाद रमेश, सुर दें और उत्तम को उनके द्वारा तोड़ी गई रोड़ी का भुगतान किया। तीनों ने कुल 18 (अठारह) कट्टे रोड़ी तोड़े और उन तीनों को चार सौ रुपए का भगुतान किया। रोड़ी तोड़ने के लिए कोई स्थानीय आदमी न मिलने के कारण बच्चों से यह काम करवाना पड़ा। परंतु यह कार्य उन्होने अपनी सहमति से किया और छुट्टी के बाद किया। आज लकड़ी लाने वाली महिला का भी भुगतान किया। उसे दो भारे लकड़ी के एक सौ सत्तर रुपए दिए। आज केदारी एक महिला की बनाई हुई स्वेटर बेचने के लिए स्कूल में लाई थी जो बहुत अच्छी नहीं थी। मैनें उसे कहा कि मैं उक्त गरीब महिला की वैसे ही मदद कर दूँगा।

स्वेटर वह किसी और को बेच दे। आज ही दो बच्चों को घी के पैसे का भुगतान किया। बच्चों से 14 तारीख को तीन किलो घी मँगवाया था। आज ही एन.पी.आर.सी.समन्वयक श्री बिष्ट जी का संदेश प्राप्त हुआ कि 27 तारीख को बी.आर.सी. में खाद्यान्न सबंधी ऑडिट होना है तो कल उसकी तैयारी के लिए मानसिक तैयारी की।

23 अगस्त, 2007

आज पौने आठ बजे विद्यालय में पहुँचा। अधिकांश बच्चे स्कूल पहुँच गए थे लेकिन दोनों स्वयं सेविका साथी, विद्याकदें॰ लोदू की आचार्या श्रीमती बिमला और भोजन माता अभी तक नहीं पहुँच पाईं थीं। मेरे आते ही पाँच–सात मिनट बाद वे भी आ गईं प्रार्थना सत्र की गतिविधि हुई। प्रार्थना गाने के लिए कोई भी बच्चे आगे नहीं आना चाहते हैं। रोज ही उन्हें बार–बार कहके और कभी–कभी डाँट कर आगे भेजना पड़ता है। इसी तरह राष्ट्रगान और प्रतिज्ञा भी बच्चे शुद्ध नहीं बोल पाते। प्रतिज्ञा बोलने में तो बहुत गलतियाँ करते हैं। मुझे स्वयं इस सबंध में गभींर होना पड़ेगा। मुझे लगता है कि बच्चे पूरे प्रार्थना सत्र को एक बोझ की तरह लेते हैं। मुझे इस सत्र को रोचक बनाने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है और मैं करूँगा भी। आज भी मेरा स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक नही ंथा। बदन टूट रहा था और थकान महसूस हो रही थी। पर आज सभी कक्षाओं में गया, स्वयं उपस्थिति ली और साथी लड़कियों को पढ़ाने के तरीके बताए। कक्षा चौथी और पाँचवीं के दोनों समूहों को पढ़ने के लिए बनाए अभ्यास पत्रक 2 पर अभ्यास कराया और उसमें से खाने वाली चीजों के नाम, सब्जियों के नाम, पशुओं के नाम, फूलों के नाम और आदमियों के नाम छँटवाए।

हर बच्चे की सीखने और समझने की गति अलग–अलग होती है यही चीज अध्यापक का धैर्य विचलित कर देती है। हम चाहते हैं कि प्रत्येक बच्चा हर विषय में एक ही गति से आगे बढ़े। पर ऐसा होता नहीं है अगर हम इस मामूली सी बात को स्वीकार कर लें तो बच्चों को काफी मदद मिल सकती है।
पढ़ने के अपने इन तीन पत्रकों में बच्चों के अपने परिवेश के कई बार सुने समझे शब्दों का समूह और सरल कहानी जिसे वे आसानी से पढ़कर समझ सकते हैं ने मेरी काफी मदद की। और मेरी नहीं आखिर यह स्वयं बच्चों की अपनी ही मदद थी। कक्षा चौथी और पाँचवी के बीस बच्चों में से जहाँ केवल तीन बच्चों को ठीक से पढ़ना आता था, अब धाराप्रवाह पढ़ने वाले बच्चों की संख्या दस हो गई है। ये दस बच्चे न सिर्फ पढ़ी हुई सामग्री को समझने लगे हैं उसका विश्लेषण कर विषय वस्तु का वर्गीकरण भी करने लगे हैं। इस समूह के साथ अब मुझे कहानी पत्रक पर काम करना है। दूसरे समूह के बच्चे कुछ शब्दों को पूरी तरह से और कुछ को अटक–अटक कर पढ़ पा रहे हैं परंतु जिन्हें पढ़ रहे हैं उसे समझकर पढ़ रहे हैं। हालाँकि यह गतिविधि दूसरी कक्षा के स्तर के लिए होनी चाहिए पर जब पाँचवीं के बच्चे दूसरी कक्षा के स्तर से भी नीचे थे तो मुझे यह प्रयोग सबसे पहले उन्हीं के साथ दोहराना पड़ा और मुझे आशातीत सफलता मिली है। इसके साथ ही नई पाठ्य पुस्तकों की अवधारणा कि वर्णों की बजाय शब्द पठन से शुरुआत कर वर्णों की पहचान पर आएं की धारणा को बल मिला है।

इस गतिविधि से बच्चा समझ कर लिख पा रहा है, इसका भी परीक्षण होता है वह इस तरह कि मैनें पत्र में एक सौ अड़सठ शब्दों का संकलन किया है वे शब्द जिन्हें बच्चे अक्सर सुनते रहते हैं अक्सर प्रयोग करते हैं और जो उनके लिए नितान्त अपरिचित नहीं हैं मैने पहले इन शब्दों का अनुकरण वाचन कराया। फिर उँगली रखकर प्रत्येक शब्द के हरेक वर्ण पर जोर देकर पढ़वाया। फिर शब्दों पर चर्चा कराई जैसे जलेबी क्या हैं ? बच्चे जवाब देते हैं खाने की चीज, मिठाई बच्चे अक्सर मातृभाषा के टोन में जवाब देते हैं जेसै मिठाई को कहेगें – मिठै। कर्ता क्या है तो बच्चों का जवाब होता है – लाने की चीज। यहाँ लाने का अर्थ है पहनना। तो बच्चे समझते हैं पर अभिव्यक्ति में मातृभाषा के शब्दों की भरमार होती है हमारी पारंपरिक शिक्षण पद्धति बच्चों के इस तरह के भाषाई प्रयोग को न सिर्फ हतोत्साहित करती है बल्कि उनका उपहास भी उड़ाती है। हमारा आम पारंपरिक अध्यापक ठोस मानक भाषा की अपेक्षा रखता है। ठोस मानक भाषा के शुद्ध प्रयोग के प्रति रूढ़ होता है जो बच्चे की भाषाई अभिव्यक्ति को विकसित नहीं होने देता।

इस पत्रक से हम शब्दों का खेल खेलते हैं आज कुछ बच्चों ने गुलाबजामुन को फूलों की श्रेणी में लिखा। इसी तरह कुछ बच्चों ने चमेली को जगह का नाम बताया तो कईयों ने तितली को चिड़िया की सूची में रखा। ऐसे प्रसंग आने पर चर्चा के लिए अच्छा माहौल मिलता है। रबड़ी को कई बच्चों ने रबड़ के अर्थ में लिया और कहा कि इसे हम बालों में लगाते हैं लड़कों ने कहा कि रबड़ी मिटाने की चीज है क्रीम को सभी बच्चों ने खाने वाले क्रीमरोल के अर्थ में लिया और इस शब्द को खाने वाली चीजों की सूची में रखा। मकड़ी को स्थानीय भाषा में मकड़ा कहते हैं। बच्चे मकड़ी और मकड़ा को एक ही चीज नहीं समझ पाए। बच्चे पशु और पक्षियों का अंतर तो समझते हैं पर पशु और कीटों का अंतर नहीं समझते इसीलिए उन्होंने तितली, और पिटंगे को चिड़िया की सूची में डाला और छिपकली, काक्रोच और सांप को पशुओं की सूची में लिखा। तो यह गतिविधि एक साथ भाषा, हमारे परिवेश और विज्ञान आदि विषयों पर एक साथ चर्चा

कर पाने का माहौल देती है इसे मैं अब महसूस कर रहा हूँ। हालाँकि इसे बनाने का मेरा उद्‌देश्य मात्र पढ़ने के कौशल का विकास करना था। कक्षा तीन के समूह एक को जिसमें आठ में से पाँच ही बच्चे उपस्थित थे से हासिल वाले जोड़ कराए और दूसरे समूह जिसमें बारह में से नौ ही बच्चे उपस्थित थे, से बिना हासिल वाले जोड़ का अभ्यास कराया। जोड़ के लिए पहाड़े बनाओ की गतिविधि का प्रयोग कर रहा हूँ। जैसेै तेरह का पहाड़ा बनाना है तो बच्चे तेरह को दो बार जोड़ें तो तेरह दूनी कितना होता है पता चल जाएगा। इसी तरह तेरह को आठ बार जोड़ने पर तेरह अठे का मान प्राप्त होगा। इस गतिविधि में बच्चे रुचि लेते हैं। कई बार रटे हुए पहाड़ों को इस विधि से निकालते हैं तो उन्हें लक्ष्य तय करने का मौका मिलता है और उत्तर की पुष्टि होने पर खुशी होती है और बार–बार जाड़े के अभ्यास का मौका भी मिलता है आज समूह दो से जमना समूह एक में शामिल हो गई वह अब हासिल वाले जोड़ करने लगी है । कक्षा एक और दो के बच्चों के साथ मौखिक वार्तालाप तो हुआ पर उनके साथ लिखित गतिविधि नहीं करवाई इन दोनों कक्षाओं को बिंदुलेश ने देखा।

मेरा विद्यालय

रविन्द्रनाथ टैगोर
अंग्रेजी से अनुवाद : उषा चौधरी

लगभग चालीस वर्ष कि अवस्था में मैंने बंगाल में एक स्कूल स्थापित किया। निश्चय ही मुझ जैसे व्यक्ति से, जिसने जीवन का अधिकांश समय कविताएं लिखने में व्यतीत किया हो, किसी को ऐसी आशा नहीं थी। इसलिए स्वाभाविक रूप से लोगों ने सोचा कि यह स्कूल अति उत्तम तो नहीं होगा, लेकिन अनुभवहीनता एवं साहस की वजह से उसमें परम्परागत से अलग कुछ विशेष नवीनता जरूर होगी। इसी कारण प्रायः मुझसे पूछा जाता है कि मेरा विद्यालय किन विचारों पर आधारित है? मेरे लिए यह प्रश्न अत्यंत संकोच में डालने वाला होता है क्योंकि केवल अपने प्रश्न–कर्त्ताओं को संतुष्ट करने के लिए मैं अपने उत्तर में सामान्य किस्म के विचार प्रस्तुत करने लगूँ यह उचित नहीं होगा। दूसरी ओर, मौलिक होने के लोभ का संयमन करते हुए मैं केवल सत्य को प्रस्तुत कर संतुष्ट हो जाऊंगा।

सर्वप्रथम तो मैं स्वीकार करता हूं कि मेरे लिए यह बता पाना वास्तव में कठिन है कि मेरी संस्था किन विचारों पर आधारित है क्योंकि विचार किसी ठोस नींव की तरह तो होते नहीं जिन पर कोई भवन खड़ा कर दिया जाए वरन् वे तो बहुत कुछ एक बीज की तरह होते हैं जिसे बढ़ते हुए पौधे से अलग करके नहीं पहचाना जा सकता।

मैं जानता हूं कि इस विद्यालय के अस्तित्व में आने का श्रेय किसको है। इसकी स्थापना को प्रेरित करने वाली शिक्षा की कोई नई पद्धति नहीं, वरन् मेरे स्कूल के दिनों की स्मृतियां थी।

विद्यालय जाने के वे दिन मेरे लिए अप्रसन्नता भरे थे। मुझे नहीं लगता कि इसके लिए मेरा स्वभाव दोषी है या उन स्कूलों के कुछ खास अवगुण जहां मुझे भेजा गया। हो सकता है कि अगर मैं कुछ कम संवेदनशील होता है तो इस दबाव के अनुरूप ढल जाता और विश्वविद्यालय उपाधि प्राप्त करने तक वहां बना रह पाता। लेकिन जो भी कहो, विद्यालय तो विद्यालय होते हैं, अपने–अपने मापदण्डों के अनुसार, कुछ बेहतर ता कुछ खराब।

छोटे शिशुओं के लिए भोजन के रूप में मां के दूध की व्यवस्था है। उन्हें उनका भोजन और उनकी मां एक ही समय में मिल जाते हैं। यह उनके लिए सम्पूर्ण पोषण है – शरीर का भी, आत्मा का भी। यह उस महान सत्य से उनका पहला परिचय है कि संसार से मनुष्य का सच्चा संबंध व्यक्तिगत प्रेम की वजह से है, न कि कार्य कारण आधारित यंत्रवत नियमों की वजह से। इसलिए हमारे बचपन को पूर्ण मात्रा में जीवन की वह खुराक मिलनी चाहिए जिसके लिए उनमें अंतहीन पिपासा होती है। छोटे–छोटे बालकों के मन को इस विचार से पूरी तरह संतृप्त कर दिया जाना चाहिए कि उन्होंने मनुष्यों की ऐसी दुनिया में जन्म लिया है जो उनके चारों ओर की दुनिया से पूरी तरह समरस और सामंजस्यपूर्ण है।

और हमारे सामान्य स्कूल अपनी उच्च बौद्धिकता और तिरस्कारपूर्ण रवैये के साथ, इसी बात की तीव्र उपेक्षा करते हुए, बच्चों को बलपूर्वक ईश्वर द्वारा निर्मित इस सुन्दर और रहस्यों से भरे संसार से दूर कर देते हैं जो व्यक्तित्व की सकारात्मक भावनाओं से भरा हुआ है। मात्र अनुशासन की यह प्रणाली व्यक्ति की वैयक्तिकता को पूरी तरह नकार देती है। यह ऐसा कारखाना है जो विशेष प्रकार के एक ही जैसे नमूने तैयार करने के लिए बनाया गया है। शिक्षा की कार्य प्रणालियां बनाने के लिए यह एक औसत आधारित काल्पनिक सीधी रेखा खींच कर उसका अनुसरण करता है, लेकिन जीवन की रेखा सीधी सपाट नहीं होती। वो तो उस औसत की रेखा के साथ उतार–चढ़ाव का खेल खेलने की शौकीन होती है, जिसकी वजह से फिर बच्चों को स्कूल की प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। और जब मैं स्कूल भेजा गया, यही मेरे दुख का कारण

था। अचानक मैंने पाया कि मेरे चारों ओर की दुनियां लुप्त होती जा रही है ओर की दुनियां लुप्त होती जा रही है और उसके स्थान पर ऊंची दीवारें और लकड़ी की बैंचें मुझे किसी अंधे की सूनी आंखों की तरह लगातार घूर रही हैं।

पौराणिक कथा है कि ज्ञान के फल का स्वाद लेना और स्वर्ग में रहना साथ–साथ नहीं हो सकता। इसलिए ज्ञान प्राप्त करने के लिए मनुष्य के बच्चों को स्वर्ग का संसार त्याग कर, मृत्यु के इस साम्राज्य में आना ही पड़ता है जहां ठोक–पीट कर सही करने वाले विभाग का ही प्रभुत्व है। इसलिए मेरे दिमाग को अत्यंत कैसे हुए स्कूली डिब्बे को स्वीकार करना पड़ा, जहां मैंडारिन स्त्री के जूतों की तरह, हर तरफ से मेरी प्रकृति पर, मेरी क्रियाओं पर चिकोटियां और खरोचें पड़ती रहीं। मैं भाग्यशाली था कि संवेदनहीनता की अवस्था आने के पहले ही अपने को वहां से मुक्त कर सका।

हालांकि सुसंस्कृत समाज में प्रवेश पाने के लिए मुझ जैसे परिवेश के लोगों को जितनी सजा भुगतनी पड़ती है, मुझे उतनी नहीं भुगतनी पड़ी, फिर भी मुझे खुशी है कि मैं उससे पूरी तरह मुल्तवी नहीं रहा। इससे मुझे यह अहसास हुआ कि इस दौरान मनुष्य के बच्चों पर क्या–क्या गुजरता है।

उक्त स्थिति उत्पन्न होने का कारण ''बच्चों का ज्ञान कैसे बढ़ाया जाए?'' इस विषय में मनुष्य के अभिप्राय का ईश्वर के अभिप्राय से विपरीत होना है। हम अपने व्यवसाय को कैसे चलाएं, यह हमारा निजी मामला है और इसके लिए हम अपने कार्यालयों में अपने ढ़ंग के तरीके अपनाने के लिए स्वतंत्र हैं, लेकिन यह कार्यालयीन व्यवस्था ईश्वर की कृति के लिए उपयुक्त नहीं हैं और बच्चे ईश्वर की अपनी कृति, अपनी सृष्टि है।

हम इस संसार को केवल जानने के लिए नहीं वरन स्वीकार करने के लिए आए हैं। हम ज्ञान के द्वारा शक्तिशाली तो बन सकते हैं, लेकिन पूर्णता हमें सहानुभूति और सहिष्णुता द्वारा ही प्राप्त होती है। उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचनाएं या जानकारी नहीं देती, बल्कि हमें अस्तित्व में आई अन्य चीजों के साथ सामंजस्यपूर्ण ढंग से जीवन बिताना सिखाती है। लेकिन सहृयता की यह शिक्षा न केवल स्कूलों में बड़े सुनियोजित ढंग से उपेक्षित कर दी जाती है बल्कि उसे अच्छे से दबा दिया जाता है। बिल्कुल बचपन से ही हमारी आदतें डाल दी जाती हैं और ज्ञान इस प्रकार दिया जाता है कि जीवन को प्रकृति से जबरदस्ती अलग कर दिया जाता है और हमारा दिमाग जीवन के प्रारम्भ से ही दुनिया के विरोध में रहने का आदी हो जाता है।

इस तरह से वह सर्वोत्तम शिक्षा जिसे प्राप्त करने के लिए हम तैयार हुए थे, उपेक्षित रह जाती है और उसकी जगह सूचनाओं के भंडार को प्राप्त करने के लिए हमारी दुनिया हमसे छुड़ा दी जाती है। बच्चे को भूगोल पढ़ाने के लिए हम बलपूर्वक उसकी जमीन छीन लेते हैं व्याकरण पढ़ाने के लिए उसकी भाषा छीन लेते हैं। वह मनुष्यों के संसार में पैदा हुआ था लेकिन अज्ञानता के साथ पैदा होने के उसके पाप के परिष्कार के लिए हम उसे निर्वासित कर ग्रामोफोनों की दुनिया में ढ़केल देते हैं। बाल स्वभाव कष्ट सहने की पूरी ताकत के साथ ऐसी प्रताड़नाओं का विरोध करता है, लेकिन उसे दण्डित कर, दबाकर चुप कर दिया जाता है।

हम सब जानते हैं कि बच्चों को मिट्टी से बेहद प्यार होता है। उनका पूरा शरीर और दिमाग फूलों की तरह सूर्य के प्रकाश और हवा के लिए प्यासा रहता है। इस संसार में चारों ओर से प्रकृत द्वारा उनकी इन्द्रियों से सीधा सम्पर्क कर जो आमंत्रण मिलते रहते हैं, उन्हें वे कभी अस्वीकार नहीं करना चाहते। दुर्भाग्य से बच्चों के माता–पिता अपने–अपने व्यवसाय में,अपनी सामाजिक हैसियत के अनुरूप, अपने ही निराले नियम कायदों की दुनिया में रहते हैं।जिसके बारे में अधिकांशतः कुछ नहीं किया जा सकता क्योंकि लोग तो अपनी परिस्थितियों से प्रेरित होकर सामाजिक एकरूपता की जरूरत के अनुसार विशिष्टता प्राप्त करना चाहते हैं। परन्तु हमारा बचपन ही वह समय है जब हमें अधिक स्वतंत्रता मिलती है या मिलनी चाहिए स्वतंत्रता विशेष योग्यता प्राप्त कर परम्परागत सामाजिक व्यावसायिक संकीर्ण सीमाओं में बंध जाने की आवश्यकता से।

मुझे एक सफल, अनुभवी औरी अनुशासन प्रिय हैडमास्टर के विस्मय और नाराजगी की घटना खूब याद है जब उन्होंने हमारे स्कूल के ही एक लड़के को पेड़ पर चढ़ दो शाखाओं के बीच बैठने की जगह चुनकर पढ़ते देखा। मुझे स्पष्टीकरण में कहना पड़ा कि ''बचपन का समय ही ऐसा समय है जब कोई सभ्य आदमी ड्राईगरूम की कुर्सी और पेड़ की शाखाओं में से किसी एक को चुन सकता है। क्या मैं इस बच्चे को केवल इसलिए उस विशेषधिकार से वंचित कर दूँ, क्योंकि बड़ा हो जाने के कारण मुझे उससे वंचित होना पड़ा है। ''यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उन्हें हैडमास्टर ने वनस्पति शास्त्र पढ़ने वाले छात्रों को इस प्रकार अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया। वह पेड़ के तटस्थ (निर्वैयक्तिक) ज्ञान में विश्वास रखते थे क्योंकि वह विज्ञान के अन्तर्गत आता है लेकिन एक निजी अनुभव के रूप में नहीं। अनुभवों का यह विकास ही वृत्तियों का निर्माण करता है जो प्रकृति द्वारा प्रदत्त शिक्षा के परिणाम के रूप में सामने आता है।

मेरे स्कूल के लड़कों ने सहज रूप से पेड़ के रूपाकृति–विज्ञान का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया है। जरा से स्पर्श से ही वे जान जाते हैं कि दुस्तर चिकने पेड़ पर पैर टिकाने की जगह कहां मिलेगी। उन्हें पता है कि पेड़ की शाखाओं से किस सीमा तक स्वतंत्रता ली जा सकती है, वे यह भी जानते हैं कि पेड़ पर चढ़ते समय अपने शरीर के भार का विभाजन कैसे करें कि शाखाओं पर उनका भार कम से कम पड़े। मेरे लड़के पेड़ों का सर्वोत्तम उपयोग करना जानते हैं – फल एकत्र करने से लेकर आराम करने और अनचाहे पीछे पड़ने वालों से छुपने तक के लिए। मेरा अपना पालन पोषण शहर के एक सुसंस्कृत घर में हुआ,और जहां तक मेरे अपने आचरण की बात है, मुझे जीवन भर ऐसे आचार व्यवहार में रखा गया जैसे मैं ऐसी दुनिया में पैदा हुआ होऊं, जहां कोई पेड़ होता ही नहीं। इसलिए मैं इसे अपने लड़कों की शिक्षा का एक हिस्सा मानता हूं कि वे पूरी तरह इस बात का अनुभव करें कि वे भी अस्तित्व करें कि वे भी अस्तित्व की योजना का एक अंश हैं, और पेड़ इसके महत्वपूर्ण तत्व हैं – न केवल क्लोरोफिल बनाने और हवा से कार्बन लेनेके साधन के रूप में वन् जीवित वृक्षों की तरह भी।

प्राकृतिक रूप से हमारे पैरों के तलवे इस प्रकार के बने हैं के हमारे पृथ्वी पर खड़े होने और चलने के लिए वे सर्वोत्तम साधन बन जाते हैं। जब से हमने जूते पहलना शुरू किया हमने अपने नंगे पैरों के प्रयोजन को बहुत कम कर दिया है। हमारे लिए तो भगवान से शिकायत करने के लिए यही दुख काफी है कि उसने हमें सुन्दर संवेदनशील तलवों के स्थान पर खुर क्यों नहीं दिए। मैं मनुष्यों के लिए जूतों के उपयोग का विरोधी नहीं हूं, लेकिन मुझे जोर देकर यह कहने में भी संकोच नहीं है कि बच्चों के तलवों को उस शिक्षा से वंचित नहीं रखा जाना चाहिए जो प्रकृति उन्हें निःशुल्क देती है। हमारे शरीर के जितने भी अवयव हैं, उनमें से केवल तलवे ही अपने स्पर्श द्वारा पृथ्वी को सबसे अच्छी तरह और सबसे करीब से जाने में सक्षम हैं। पृथ्वी के अपने बड़े सूक्ष्म नियम और रूपाकृतियां हैं जिनका वह सच्चे चाहने वालों अर्थात पैरों (तलवे) को ही चुम्बन करने देती है।

मैं पुनः स्वीकार करता हूं कि मैं एक सम्मानीय परिवार में पैदा हुआ और बचपन से ही मेरे पैरों की सावधानीपूर्वक रक्षा की गई ताकि वे सीधे–सीधे मिट्टी के सम्पर्क में न आ सकें। जब मैं नंगे पैर चलने में अपने लड़कों की बराबरी करने की कोशिश करता हूं तो प्रायः मैं कांटों भरे रास्ते का चुनाव कर लेता हूं और कुछ ऐसे ढंग से चलता हूं कि कांटों को ही विजय की खुशी मिलती है। मेरे पैरों को कम से कम प्रतिरोध वाले रास्ते का अनुसरण करते हुए चलने का सहज ज्ञान नहीं है। भूमि की सतह चाहे कितनी भी सपाट क्यों न हो, उसमें भी कहीं कुछ उभार, तो कहीं छोटे–छोटे गड्ढ़े तो होते ही हैं जिन्हें केवल शिक्षित और अनुभवी पैर ही समझ सकते हैं। मुझे प्रायः ही सीधे सपाट खेतों के बीच में से टेढ़ी–मेढ़ी पगडंडियों को निकलते देखकर आश्चर्य होता है। स्थिति और भी उलझनपूर्ण तब हो जाती है जब आपको पता चलता है कि यह पगडंडी किसी एक व्यक्ति की चपलता का परिणाम नहीं है। जब तक बहुत सारे लोग उसी सनक (जुनुन) के साथ टेढ़े–मेढ़े रास्ते पर न चलें तब तक पगडंडी बन ही नहीं सकती । इसका वास्तविक कारण पृथ्वी के उन अतिसूक्ष्म संकेतों में है जिनकी ओर पैर बरबस ही ही खिंचे चले जाते हैं। जो लोग इस प्रकार की बातों से दूर नहीं कर दिए गए हैं वे जरा से संकेत पर अपने पैरों की मांसपेशियों को बड़ी तेजी से सन्तुलित कर लेते हैं। इस तरह से वे नंगे पैर चलते हुए भी बिना कठिनाई अनुभव किए अपने पैरों को कंकड़ों व कांटों की चुभन से बचा लेते हैं। मैं जानता हूं कि भौतिक संसार में जूते भी पहने जाएंगे, पक्की सड़के भी बनाई जाएंगी, कारों का भी उपयोग होगा, परन्तु शिक्षा प्राप्त करने के दौरान क्या बच्चों को यह नहीं बताया जाना चाहिए कि दुनिया सजे हुए बैठक खानों तक ही सीमित नहीं है, प्रकृत नाम की भी कोई चीज है जिसके सम्पर्क में आने के लिए उनके शारीरिक अंगों को बड़ी सुंदरता के साथ गढ़ा गया है।

ऐसे भी लोग हैं जो यह सोचते हैं कि अपने विद्यालय में सादा जीवन व्यतीत करने का परिचय देकर मैं बालकों को गरीबी के आदर्शवाद का उपदेश दे रहा हूं जैसा कि मध्यकालीन युग में प्रचलित था। शिक्षा के दृष्टिकोण से क्या हमें यह स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए कि गरीबी ही वह विद्यालय है जहां मनुष्य ने अपना पहला सबक सीखा है और सर्वोत्तम प्रशिक्षण पाया है। गरीबी हमें पूरी तरह जीवन व संसार के सम्पर्क में लाती है क्योंकि धनी लोंगों की तरह जीवन व्यतीत करना औरों के अनुभव से जीने जैसा है, जिसका सीधा–सीधा अर्थ हुआ जीवन को पूरी वास्तविकता से न जी पाना। यह बात किसी ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीवने वाले और अभिमान को पोषित करने वाले व्यक्ति के लिए अच्छी हो सकती है परन्तु शिक्षा के लिए नहीं। धन बच्चों के लिए सोने का पिंजरा है। इसलिए मैंने अपने विद्यालय में भौतिक सामान और लकड़ी के फर्नीचर की कमी करके, जिसे रईस और शौकिन लोग हेय समझते हैं, प्राकृतिक वातावरण रखा है – इसलिए नहीं कि यह गरीबी है वरन् इसलिए कि इससे बच्चों को दुनिया का व्यक्तिगत आत्मीय अनुभव होता है।

मेरे स्कूल के दिनों में जिस बात ने विशेष रूप से मुझे बहुत अधिक उत्पीड़न किया वह यह थी कि स्कूल में संसार की पूर्णता नहीं थी, वह तो एक विशेष व्यवस्था थी जो पाठों के अध्ययन के लिए की गई

थी। यह व्यवस्था वयस्कों के लिए उपयुक्त हो सकती थी जो ऐसे स्थानों की विशेष आवश्यकता के प्रति जागरूक थे और जीवन की धारा से अलग रह कर भी इस प्रकार के शिक्षण को स्वीकार करने के लिए तत्पर थे, लेकिन बच्चों को तो जीवन से प्यार होता है – और यह उनका पहला प्यार है। संसार के सारे रंग और इसमें होने वाली क्रियाएं उनकी उत्सुकता को आकर्षित करती है। उनके इस प्रेम का गला घोंटकर क्या हम वास्तव में बुद्धिमानी कर रहे हैं ? बच्चे कोई जन्मजात बैरागी नहीं हैं जो एकदम से ज्ञान प्राप्ति के लिए सन्यासियों जैसे अनुशासन में रहने लगें। उन्हें चाहिए कि पहले वे जीवन जीते हुए ज्ञान प्राप्त करें, फिर ज्ञान प्राप्ति के लिए जीवन से वैराग्य लें और बाद में पुनः परिपक्व ज्ञान प्राप्त कर पूर्ण जीवन की ओर लौटें।

लेकिन, समाज ने मनुष्यों को विशेष रूपों में ढालने के लिए कुछ अलग प्रकार के जोड़–तोड़ की व्यवस्था की गई है। इस व्यवस्था का ताना–बाना कुछ इस प्रकार बुना गया है कि उसमें कहीं से भी प्रकृति को अंदर आने देने के लिए जगह बचती ही नहीं है। कोई व्यक्ति अपनी आत्मा को जीवित रखने के लिए भी यदि इस व्यवस्था या इसके किसी भाग से मुक्त होने का दुस्साहस करता है तो उसे एक के बाद एक, अंत तक दंडित करने का सिलसिला बना हुआ है। इसलिए सच्चाई का अनुभव एक बात है और उसे ऐसी जगह व्यवहार में लाना जहां प्रचलित व्यवस्था का सारा प्रवाह ही आपकी विचारधारा के विपरीत हो,दूसरी बात। इसलिए जब मेरे सामने मेरे अपने बेटे की शिक्षा की समस्या आई तो मैं समझ ही नहीं पा रहा था कि इसका व्यावहारिक समाधान क्या होगा। सबसे पहला काम जो मैंने किया, वह यह था कि उसे शहर के वातावरण से दूर गांव के वातावरण में ले गया और उसे यथासंभव प्रकृति के साथ सहज सम्पर्क में आने की स्वतंत्रता दी। वहां नदी थी जो अपने खतरे के लिए जानी जाती थी, वहां वह तैरा और बड़ों की चिंताओं ओर वर्जनाओं से मुक्त होकर उसने नाव भी चलाई। वह खेतों में समय बितता था, अनगढ़ी पगडंडियों से रेतीले किनारों पर जाता था, खाने के लिए अक्सर देरी से आता था, परन्तु कोई उससे इस बारे में प्रश्न नहीं करता था। उसके पास आराम और ऐश्वर्य के ऐसे कोई साधन नहीं थे जो परम्परागत रीति–रिवाजों के अनुसार उसके जैसे परिवेश में रहने वाले लड़के के लिए आवश्यक ही नहीं, उचित भी मानें जाते थे। इन अभावों के लिए न केवल लड़के को दया की दृष्टि से देखा जाता था वरन् उसके माता–पिता के ऊपर भी लोगों द्वारा दोषारोपण में कोई कमी नहीं की जाती थी, ऐसे लोगों द्वारा जिनके लिए समाज ने पूरी दुनिया पर ही पर्दा डाल दिया है।

लेकिन मेरा पूरा विश्वास था कि आराम और विलासिता की चीजे लड़कों को भारस्वरूप लगती हैं। यह बोझिलता होती है दूसरों की आदतों की, विलासिता भरे अभिमान और ऐश्वर्य का प्रतिनिधि होने की, जिाकर आनन्द माता–पिता अपने बच्चोंके माध्यम से लेते हैं।

फिर भी, सीमित साधनों में रहने वाला मैं, अपने बच्चे को अपनी योजना के अनुसार शिक्षा देने की दिशा में बहुत कम कर पाया। उसे कहीं भी आने–जाने की स्वतंत्रता थी। उसके और प्रकृति के बीच व्यवधान डालने वाले धन और सामान के पर्दे बहुत कम थे। इस तरह मेरी अपेनक्षा उसे संसार का वास्तविक अनुभव प्राप्त करने के बेहतर अवसर मिले, जो मुझे कभी प्राप्त नहीं हुए। लेकिन मेरे दिमाग में अन्य सब बातों से अधिक चिंता एक और महत्वपूर्ण बात की थी।

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को 'सत्य की एकता' से परिचित कराना है। पहले समय में जब जीवन सादा था, मनुष्य के व्यक्तित्व के सब पहलुओं के बीच परस्पर पूरा सामंजस्य था, लेकिन जब से बुद्धि को आध्यात्म व भौतिकता से अलग कर दिया गया, स्कूली शिक्षा ने सारा जोर मनुष्य की बुद्धि और भौतिक पक्ष पर डाल दिया। हमारा सारा ध्यान बच्चों को सूचनाएं देने पर होता है, बिना इस बात पर ध्यान दिए कि इस प्रकार जोर देकर हम उनके बौद्धिक, भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में विघटन को बढ़ावा दे रहे हैं।

मैं अध्यात्मिक संसार में विश्वास करता हूं, जो हमारी इस दुनिया से कहीं अलग नहीं है, बल्कि इस दुनिया का ही आन्तरिक सत्य है। अनन्त ईश्वरीय रहस्यों से भरे हुए इस विशाल संसार में पैदा होकर हम यह नहीं मान सकते कि हमारा जीवन मात्र एक क्षणिक संयोग था और हम यूं ही पदार्थों के वेगभरे धारा–प्रवाह में अन्तहीन, अनिर्दिष्ट दिशा की ओर बढ़ते जा रहे हैं। हम अपने जीवन को उस स्वप्नदर्शी का ऐसा स्वप्न नहीं मान सकते जिसके जीवन में कभी जागना है ही नहीं। हमारा एक व्यक्तित्व है जिसके लिए पदार्थों और शक्ति का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक उनका संबंध उस असीम ईश्वरीय सत्ता से न हो जाए जिसकी प्रकृति (स्वभाव) को कुछ मात्रा में हमने मानवीय प्रेम, महान विभूतियों की श्रेष्ठता, वीरों के बलिदान और प्रकृति के अवर्णनीय सौंदर्य में देखा है, उसे केवल भौतिक सत्य मात्र कहकर व्यक्त नहीं किया जा सकता वरन् वह तो व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का ही एक रूप है। बचपन से लगातार उपेक्षा करते रहने के कारण हम आध्याात्मिक संसार की वास्तविकता का अनुभव नहीं कर पाते। बच्चों को पूरी तरह इस संसार में रहकर उस वास्तविकता का अनुभव नहीं कर पाते। बच्चों को पूरी तरह इस संसार में रहकर उस वास्तविकता का अनुभव होना चाहिए, मात्र कुछ धर्म संबंधी शिक्षाओं द्वारा इसकी पूर्ति नहीं की जा सकती।

लेकिन इसे किया किस प्रकार जाए ? वर्तमान युग में इस समस्या का समाधान पाना कठिन है क्योंकि लोगों ने अपने समस्त समय को इस तरह व्यस्त रखने की व्यवस्था कर ली है कि उन्हें इतना खाली समय मिलता ही नहीं कि वे जान पाएं कि उनकी क्रियाओं में केवल कुछ न कुछ करते रहने की गति मात्र भर है, परंतु सत्य बहुत कम है और उनकी आत्मा अपने संसार से बहुत दूर है।

भारत में आज भी स्मृतियों में वे परम्पराएं जीवित हैं जब महान शिक्षक वनों में निवास करते थे। शब्द के आधुनिक अर्थ में ये स्थान न तो विद्यालय थे, न ही मठ या विहार। इनमें वे घर सम्मिलित थे जहां परिवार के साथ वे लोग रहते थे जिनका लक्ष्य ईश्वर में संसार को देखना ओर उस ईश्वर में अपने जीवन का अनुभव करना था। यद्यपि वे समाज के बाहर रहते थे, लेकिन समाज के लिए उनका वही महत्व था जो विभिन्न ग्रहों के लिए सूर्य का है – जिस केन्द्र से वे जीवन और प्रकाश ग्रहण करते हैं। यहां छात्र बहुत निकट से जीवन के ध्रुव सत्य को देखते समझते थे और उसके बाद ही गृहस्थ के रूप में समाज में प्रवेश करते थे।

इस तरह से प्राचीन भारत में विद्यालय वहीं था जहां जीवन का स्त्रोत था। छात्रों का पालन पोषण न तो मात्र पढ़ने सीखने और शैक्षिक वातावरण के बीच विद्वता प्राप्त करते बीतता था, न ही अपूर्णता के साथा अलग–थलग मठों के बीच में, वे तो जीवित आकांक्षाओं के वातावरण के बीच रहते थे। वे पशुओं को चराने ले जाते थे, लकड़ियां बीनते थे, फल इकट्ठा करते थे, सब प्राणियों के प्रति अपने हृदय में दया की अनुभूति करते थे और अपनी भावनाओं को अपने शिक्षक की भावनाओं से मिलाकर अपना अध्यात्मिक विकास करते थे। ऐसा इसलिए सम्भव था क्योंकि इन स्थानों का मुख्य उद्देश्य पढ़ाना नहीं वरन् ऐसे लोगों को संबल देना था जो ईश्वर के सापेक्ष अपना जीवन जीते थे।

गुरू और शिष्यों को ये परंपरागत पारस्परिक संबंध किसी प्रेम कथा का अंश नहीं है क्योंकि हमारी देशज शिक्षा व्यवस्था में आज भी उसके अवशेष यह सिद्ध करते हैं। ये विश्वविद्यालय जो संस्कृत में ''चालुसपंथियां'' कहलाते थे, इनमें वर्तमान की 'स्कूल' कही जाने वाले संस्थाओं की गंध नहीं है। छात्र अपने गुरू के घर में परिवार के बच्चों की तरह रहते थे जहां उन्हें रहने, खाने और शिक्षा ग्रहण करने के लिए किसी प्रकार का शुल्क नहीं देना पड़ता था। शिक्षक सादगी का जीवन व्यतीत करते हुए अपना स्वाध्याय जारी रखते थे और साथ ही छात्रों की भी व्यवसाय से परे, जीवन की सहज प्रक्रिया के रूप में सहायता करते थे। इस तरह अपने गुरू के साथ जीवन की ऊंची महत्वाकांक्षाओं की साझेदारी करने के आदर्श ने मेरे विचारों को पूर्ण रूप से प्रभावित किया। दूसरे देशों के वे लोग जो असीमित सांसरिक इच्छाओं को पूरा करने के पक्षधर हैं, वे शिक्षा का उद्देश्य उन वस्तुओं की प्राप्ति मान सकते हैं। परन्तु हमारे लिए अपने आत्म सम्मान और अपने सृष्टिकर्ता के सम्मान के प्रति आभार मानने के लिए शिक्षा का उद्देश्य मानव जीवन के सर्वोच्च उद्देश्य से कम नहीं हो सकता – अर्थात सम्पूर्णतम विकास और आत्मा की स्वतंत्रता। यदि अल्प दौलत के लिए छीना–झपटी करनी पड़े, तो यह बड़ी दयनीय बात है। हमें उस जीवन को प्राप्त करना है जो मृत्यु के परे भी अस्तित्व में रहता है और सब परिस्थितियों में उच्चता प्राप्त करता है। हमें अपने ईश्वर को प्राप्त करना चाहिए। हमें उस परम सत्य के लिए जीना चाहिए जो हमें सब सांसारिक बंधनों से मुक्त करता है और हमें पदार्थों और शक्ति की नहीं वरन् आंतरिक प्रकाश एवं प्रेम की दौलत देता है। इस प्रकार की आत्मा की स्वतंत्रता हमने अपने देश के उन लोंगों में कभी देखी है जिनका जीवन बिना किताबी शिक्षा के अत्यंत गरीबी में बीता। भारत में आत्मीय ज्ञान का यह खजाना हमें विरासत में मिला है। हमारी शिक्षा का उद्देश्य इस ज्ञान को जानकर अपने जीवन में वह शक्ति प्राप्त करना होना चाहिए जिसका हम अपने जीवन में सही उपयोग कर सकें और समय आने पर उसे अपने अवदान के रूप में संसार को उसके स्थाई हित के लिए दे सकें।

जिस समय विद्यालय बनाने के विचार ने बड़ी गहरी वेदना के साथ मेरे मस्तिष्क (विचारों) को उद्वेलित किया, उस समय मैं पूरी तरह साहित्यिक गतिविधियों में लिप्त था। मुझे अचानक ऐसा लगा जैसे मैं किसी भयानक स्वप्न में घुटन महसूस करके कराह रहा हूं। यह घुटन केवल मेरी आत्मा की नहीं थी वरन् मेरे देश की आत्मा की भी थी जो लगता था मानो मेरे माध्यम से सांस लेने के लिए छटपटा रही हो। मुझे स्पष्ट आभास हुआ ि कइस समय किसी भौतिक पदार्थ की आवश्यकता नहीं है – न धन की, न आराम की, न शक्ति की, वरन् जरूरत है तो हमारी आत्मा की मुक्ति के प्रति चेतना के पूरी तरह जागृत होने की, जीवन की स्वतंत्रता को ईश्वर में देखने की, जहां हमारी उनसे कोई शत्रुता नहीं जो लड़ना चाहते हैं, उनसे कोई स्पर्धा नहीं जो पैसा पैदा करना चाहते हैं, हमें वहां पहुंचना है जहां हम इन सब आक्षेपों व अपमान से ऊपर उठ चुके हों।

अंत में मैं अपने श्रोताओं को सावधान करना चाहूंगा कि वे यहां से इस आश्रम की कोई गलत या अतिरंजित छवि लेकर न जाएं। जब विचारों को कागजों पर अभिव्यक्त किया जाता है तो वे पूर्ण और बड़े सरल मालूम होते हैं और लगता है कि हम बड़ी आसानी से उन्हें पूरा कर लेंगे, लेकिन वास्तविकता यह है

कि उसकी अभिव्यक्ति जिनके माध्यम से होनी है वे इंसान जीवित हैं, विभिन्न प्रकार के हैं, निरंतर बदलनते रहने वाले है। जिस वजह से वह अभिव्यक्ति उतनी स्पष्ट और पूर्ण नहीं होती। मानव स्वभाव में भी बाधाएं हैं और बाह्य परिस्थितियों में भी। हम में से कुछ लोग लड़कों के दिमाग को जीवित अवयव मानने मे कम ही विश्वास रखते हैं तो कुछ स्वभावतः मानते हैं कि बलपूर्वक ही अच्छे काम कराए जा सकते हैं। दूसरी ओर लड़कों में भी अलग–अलग मात्रा में ग्रहणशीलता होती है और कई लड़के अपरिहार्य रूप से असफल भी होते हैं। कभी उनमें अचानक ही अपराध वृत्ति दिखाई पड़ने लगती है और हम स्वयं ही अपने विचारों के परिणामों के प्रति आशंकित होने लगते हैं। हम शंकाओं और प्रतिक्रियाओं के अंधेरे के बीच से गुजरते हैं। लेकिन यह संघर्ष और विचलन वास्तविकता का ही एक पहलू है। जिन लोगों को अपने विचारों पर दृढ़ विश्वास है, उन्हें रास्तें में भटकाने वाली विसंगतियों और असफलताओं के बीच अपने विचारों की सत्यता का परीक्षण करना होगा।

जहां तक मेरा प्रश्न है, मैं जीवन के सिद्धांत में विश्वास करता हूं, तरीकों की अपेक्षा मनुष्य की आत्मा में विश्वास करता हूं। मेरा विश्वास है कि शिक्षा का उद्देश्य विचारों की स्वतंत्रता है, जिसे स्वतंत्रता के मार्ग से ही पाया जा सकता है। हालांकि जीवन के समान ही स्वतंत्रता के खतरे भी हैं और जिम्मेदारियां भी। यद्यपि अधिकतर लोग यह भूल चुके हैं, परंतु मैं इसे अच्छी तरह जानता हूं कि बच्चे जीवित प्राणी हैं, वे उन बड़े लोगों की अपेक्षा अधिक जीवंत हैं जिन्होंने अपने चारों ओर अपनी आदतों की खोल ओढ़ रखी है, इसलिए उनके मानसिक स्वास्थ्य और विकास के लिए यह नितांत आवश्यक है कि स्कूल केवल पाठ पढ़ने के लिए न हो वरन् एक संपूर्ण दुनिया के रूप में हो जो प्यार पर आधारित हो। यह एक ऐसा आश्रम होना चाहिए जहां लोग जीवन के उच्चतम उद्देश्य के लिए एकत्रित हों। शांति प्रकृति के बीच जीवन केवल चिंतन करने के लिए न हो, वरन् उसकी गतिविधियों में पूरी तरह जागृति हो, जहां दिमाग में लगातार ठोक–ठोककर यह न भरा जाए कि उनके लिए केवल राष्ट्र की मूर्तिपूजा को स्वीकार करना ही उच्चतम आदर्श है, जहां उन्हं यह अनुभव करने के लिए अभिप्रेरित किया जाए कि मनुष्यों की यह दुनिया ईश्वर का साम्राज्य है और इसकी नागरिकता की उन्हें आकांक्षा करनी चाहिए। यह दुनिया वह है जहां सूर्योदय, सूर्यास्त और तारों की नीरव शोभा को रोज उपेक्षा से नहीं देखा जाता, जहां मनुष्य प्रकृति के फूलों और फलों के उत्सवमय अस्तित्व का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है और जहां बच्चे और वयस्क, शिक्षक और छात्र एक ही मेज पर बैठकर अपने दैनिक भोजन के साथ–साथ अमरतापूर्ण जीवन के लिए भी भोजन ग्रहण करते हैं।

मेरी ग्रामीण शाला की डायरी

जूलिया वेबर गॉर्डन

अनुवाद : पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मंगलवार 8 सितंबर

गर्मियों के दौरान मैंने फनी डन्न तथा मार्सिया एवरेट की किताब फोर इयर्स इन अ कंट्री स्कूल फिर से पढ़ी और उन पाठ्यपुस्तकों को भी देखा जिनका इस्तेमाल मुझे करना है। आज मैं पहले दिन की तैयारी करने का महत्वपूर्ण काम करने बैठी हूं। बच्चों को यह लगना चाहिए कि उन्होंने सच में कुछ हासिल किया, और जो समय यह सब करते गुजारा उसमें उन्हें मजा भी आया। तभी तो अगले दिन काम करते देखने का मौका भी दें ताकि मैं उन्हें जान सकूँ। पर साथ ही यह कार्यक्रम इतना तयशुदा तो हो ही कि मैं आत्मविश्वास से बच्चों के साथ हँस खेल सकूँ और वे मुझे अपना दोस्त मान सकें। समूचे साल की सफलता और असफलता काफी हद तक इस पहले दिन पर टिकी हुई है। मेरी योजना की रूपरेखा यों है :

प्रातः 9 से 9:30 मेज कुर्सियों की ऊँचाई बच्चों के हिसाब से ठीक करना। किताबें और समाग्रीयाँ बाँटना (इससे बच्चों को शुरू से ही सक्रिय रूप से कुछ करने को मिलेगा)।

9:30 से 10:30 सामाजिक अध्ययन। शुरू में दस मिनट बच्चों को कुछ बताना। सम्भव हो तो उन्हें अपने विषय में कुछ बताने को उकसाना।

बड़ी कक्षाओं (छठी, सातवीं, आठवीं) के समूह और बीच के (चौथी, पांचवी के) समूह को इतिहास की पाठ्यपुस्तक के कुछ पन्ने पढ़ने को कहना। जिन सवालों के जवाब उन्हें देने हैं उन्हें ब्लैकबोर्ड पर लिख देना होगा। ये बच्चे खुद पढ़ेंगे और मैं अगले बीस मिनट प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों से बातचीत करूँगी।

प्राथमिक बच्चों से यह बात करूँगी कि गर्मियों में उन्होंने क्या–क्या मजे किये। छोटे बच्चे अमूमन बात करते समय अपने पालतू जानवरों पर आ जाते हैं। कोशिश यह करनी होगी कि सभी बच्चे कुछ योगदान जरूर करें। उनके साथ छोटी–छोटी पुस्तकें बनाने की योजना बनाऊँगी, जो शायद उनके पालतू जानवरों पर होंगी। उनसे कहूँगी कि वे चित्र बनाएँ और जो कुछ उन्होंने चर्चा में कहा था उसे लिख डालें।

प्राथमिक बच्चे अपना काम जारी रखेंगे और मैं बिचले समूह के साथ पन्द्रह मिनट का करूँगी। हम एक–एक कर सभी सवालों पर चर्चा करेंगे। तब प्राथमिक बच्चे बिचले समूह के एक बच्चे के नेतृत्व में बाहर चले जाएंगे। बिचले समूह के शेष बच्चे चर्चा के अनुसार काम जारी रखेंगे। मैं तब बड़ी कक्षाओं के बच्चों के साथ पन्द्रह मिनट की चर्चा करूँगी। बातचीत उसी तरह होगी जैसे बिचले समूह के साथ हुई थी।

10:30 से 10:50 शारीरिक शिक्षा। चौथी से आठवीं तक की कक्षाओं के बच्चों को डॉज बॉल खिलवाना शुरू कर प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ खेलूंगी।

10:50 से 12:50 प्राथमिक बच्चों की ''क्लार्क इंग्राहम पठन निदान परीक्षा' लूँगी। (इससे उनकी पठन क्षमता का कुछ पता चल सकेगा) इस दौरान बड़े बच्चे अपनी–अपनी ''रीडर'' में से पहली कहानी पढ़ेंगे और उनकी समझ को जाँचने के लिए कुछ सवालों के जवाब देंगे। यह काम खत्म करने पर वे पुस्तकालय से लाई नई किताबें देख पढ़ सकेंगे, जिन्हें मैं स्कूल ले जाऊँगी।

12:00 से 1:30 प्रार्थना इत्यादि। बाइबल पढ़ना, अमरीकी ध्वज को सलाम।

संगीतः बच्चों से गोल्डन बुक ऑफ सॉंग्स से चुनकर गीत गाने को कहना।?

1:30 से 2:15 बड़े बच्चों का गणित निदान टेस्ट लूँगी। छोटे बच्चे पुस्तकालय की किताबें देख पढ़ सकेंगे और बाहर खेलेंगे। यह पीरियड मुझे बच्चों के काम का अवलोकन करने का मौका देगा। सवा दो बजे प्राथमिक बच्चे घर लौट जाएँगें।

2:15 से 2:30 शारीरिक शिक्षा। बड़ी कक्षाओं के बच्चों के साथ कोई खेल खेलना।

2:30 से 2:45 वर्तनी। सातवीं व आठवीं कक्षाओं को मिलाकर आठवीं के शब्दों की परीक्षा। पाँचवीं – छठी को मिलाकर छठी के शब्द। चौथी कक्षा के लिए चौथी के शब्द। सभी बच्चों को एक साथ बैठाकर यह सिखाना होगा कि वे अपने अपने शब्दों को स्वतंत्र और निपुण ढ़ंग से कैसे पढ़ें और सीखें।

2:45 से 3:30 गणित। सभी बच्चे कमोबेश व्यक्तिगत स्तर पर काम करेंगे। वे अपनी किताबों की शुरूआत में दिए गए दोहराव के पाठ से प्रारम्भ करेंगे। मुझे उनकी काम करने की आदतों के अवलोकन का मौका फिर से मिलेगा।

यह योजना वैसे तो काफी औपचारिक सी लग रही है, पर बच्चों के साथ मेरा बर्ताव अनौपचारिक और दोस्ताना भी हो सकता है।

बुधवार 9 सितंबर

सुबह घर से निकलते समय डर और थरथराहट सी थी। मैं तैयार थी और जानती थी कि कक्षा व्यवस्थित है, सामग्रियां करीने से रखी हैं, और पूरे दिन की सावधानीपूर्वक योजना बना ली गई है, पर अपनी सारी अपर्याप्तताओं के बोझ का एहसास मुझे दबा रहा था। घर से शाला भवन की दूरी ग्यारह मील है, और रास्ते भर मै। अपने सम्बोधन को दोहराती रही। मैं बच्चों को बताऊँगी कि खुद को उनके बीच में पाकर मैं कितनी खुश हूँ। यह हमारा सौभाग्य है कि हम एक निहायत खूबसूरत जगह पर रहते हैं, और हम मिलजुलकर उसकी खोजबीन करेंगे। मैं उन्हें यह भी बताऊँगी कि यह साल कमोबेश साथ–साथ तलाशेंगे और एक दूसरे को समझने की कोशिश करेंगे।

पर यह भय मुझे सताने लगा कि बच्चे समझेंगे नहीं। शायद मुझे एक कहान कहनी चाहिए, एक हास्यकथा, पर खूब सोचने पर भी एक भी उपयुक्त कहानी नहीं सूझी।

जब मैं स्कूल पहुँची तो बच्चे दरवाजे के इर्द–गिर्द इकट्ठे खड़े थे और उसमें घुसना ही मुश्किल था। वे मेरे साथ ही दाखिल हुए और तब तक स्थान बदलते रहे तब उन्हें मन–माफिक जगह न मिल गई। अन्ततः कमरे में शांति सी छा गई और वे मुझे आतुरता से देखने लगे। स्कूल शुरू करने के अलावा कोई चारा न था। हमने मेज कुर्सियों की ऊँचाई सही की। रैल्फ और फ्रेंक न इस काम की देख–रेख की। नौ बजते–बजते हम काम शुरू करने को तैयार थे। बच्चे आज चुप थे और अधिकतर वह सब करते रहे जो उन्हें कहा गया।

कुछ बच्चे समूह में अलग नजर आते हैं। रैल्फ और फ्रेंक, दो बड़े लड़के, और एना व रूथ मौका पड़ते ही मदद को तैयार रहते हैं। मार्था की आंखें जोर से चमकती है। हिल लड़कों की मुस्कान प्यारी सी है। ओल्गा इतनी बड़ी और शर्मीली है और वह असहज सी महसूस करनी लगती है। दोनों नन्हें विलियम्स बच्चे घबराए से लगते हैं। ढ़ेरों कार्टराइट बच्चे हैं। जोसेफ डण्डर, जो मनौवैज्ञानिक क्लिनिक की रिपोर्ट के अनुसार लगभग मनोरोगी है, ने नाक में दम कर दिया। सभी बच्चे शर्मीले और संकोची लगे।

गुरूवार 10 सितंबर

आज की समय सारिणी लगभग कल सी थी और मेरा मुख्य उद्देश्य था बच्चों के बारे में और अधिक जानना। पठन की कक्षाओं में मैंने हरेक बच्चे को बोलकर पढ़ते सुना और मैंने यह तय कर लिया है कि मैं फिलहाल उनके अस्थायी समूह कैसे बनाऊँगी। मैंने पाया कि इतिहास में पाठ आठवीं के बच्चों के अलावा दोनों समूहों को समझने में बेहद कठिन लग रहे हैं। एण्ड्रयू, जिसे दरअसल चौथी में होना चाहिए,

प्रवेशिका तक नहीं पढ़ पाता है। प्राथमिक बच्चों ने अपनी पठन परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया, परन्तु चौथी और उसके बाद की कक्षाओं के बच्चों का पठन कौशल आमतौर पर कमजोर है। कुछ ही बच्चे हैं जिन्हें पढ़ना पसंद है। सभी ने पुस्तकालय की किताबों के चित्र देखें, पर कुछ ही लड़कियों ने उन्हें पढ़ना शुरू किया है। इस सबसे लगता है कि मेरा सबसे बड़ा काम होगा इन बच्चों को छपे पन्नों से अधिकतम निकाल पाने में मदद करना और पढ़ने में आनंद लेना सिखाना। मेरे ख्याल में पढ़ने की क्षमता में कमी का एक कारण यह है कि यहाँ पढ़ने के अनुभव का ही अभाव है। मैंने गौर किया कि वे पढ़ते समय कई कठिन शब्दों की जगह चालू भाषा के शब्द रख काम चला लेते हैं।

आज बच्चों की दो अन्य आवश्यकताएँ भी सामने आईं। पहली तो यह कि इन बच्चों को न तो साथ–साथ खेलना आता है, न ही वे साथ खेलना चाहते हैं। कल लड़कियों को लड़कों के साथ डॉजबॉल के खेल में दिक्कत हुई थी। लड़कियों ने कहा कि लड़के बड़े उजड्ड हैं। आज लड़कियों ने कहा कि वे छोटे बच्चों के साथ खेलना चाहती हैं। लड़कों के लिए जो खेल मैंने शुरू करवाया था वह जल्दी ही बन्द हो गया और वे हमें खेलते देखने लगे। मैंने उन्हें साथ खेलने को आमंत्रित किया और जवाब में वे हँस पड़े। मैंने देखा कि रैल्फ इनका नेता लग रहा था और मैंने मन में गाँठ बाँध ली कि उसे अपनी पाली में मिलाने का उपाय मुझे ढूँढ़ना होगा।

दूसरा, अगर इन बच्चों से ऐसी किसी गतिविधि में हिस्सा लेने को कहा जाता है जिसे वे स्कूली काम नहीं मानते तो वे असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। अधिकतर लड़के गाते नहीं हैं। वे मुझे कहते हैं कि वे गा नहीं सकते। मैंने जानना चाहा कि क्या वे हारमोनिका बजाना सीखना चाहेंगे। उनकी प्रतिक्रिया ठीक–ठाक था। इससे इन अतिसंवेदनशीन लड़कों को संगीत का कुछ अनुभव मिल सकेगा।

आज बच्चों से व्यक्तिगत स्तर पर थोड़ी निकटता आ पाई। वॉरेन दो बार अपना काम न कर पाने के कारण रो पड़ा। पहली बार मैंने अनदेखी की, पर दूसरी बा रवह इतनी जोर से रो रहा था कि मैं शारीरिक शिक्षा वाली कक्षा को खुद खेलने छोड़ उससे बात करने आई। मैंने कहा, ''वॉरेन, हम अपनी समस्याओं पर रोते नहीं हैं, उन्हें सुलझाने की कोशिश करते हैं। मेरा काम यह भी है कि तुम्हारी उन समस्याओं को सुलझाने में मदद करूँ जिन्हें तुम खुद नहीं सुलझा पाते। रोने के बदले क्या तुम मुझे यह नहीं बताओगे कि तुम्हारी परेशानी क्या है ?'' दो गहरी साँसों के बीच उसने कहा कि वह कोशिश करेगा।

जॉन और जोसेफ डण्डर आज अनुपस्थित थे। इससे मुझे मौका मिला कि मैं उनके घर जाऊँ और उनके माता–पिता से परिचय कर लूँ। वॉरेन ने कहा कि वह मुझे डण्डर परिवार का घर दिखा देगा और उसके कुछ और करीब आ पाने के इस अवसर का मैंने स्वागत किया। वॉरेन का भाई एल्बर्ट और वॉल्टर विलियम्स भी साथ चलना चाहते थे। स्कूल के बाद मैं पहने वॉरेन और फिर वॉरल्टर के घर उन्हें साथ ले जाने की अनुमति लेने गई। हम जब पहुँचे तो श्रीमती हिल ब्रेड बना रही थीं। हिल परिवार ने अपना छोटा सा खेत तीन साल पहले खरीदा था और अब वे घर की मरम्मत करवा रहे हैं। वॉरेन ने खुशी से गमकते हुए मुझे घर में हुआ हर सुधार दिखाया। मुझे पत्थरों से बना बड़ा अलाव खास तौर पर पसंद आया जो उन्होंने अपनी बैठक में बनवाया हैं। श्री हिल शिक्षक हैं और हर हफ्ते शनि और रविवार को घर आते हैं।

विलियम्स परिवार के यहाँ मैं वॉल्टर की माँ और दो छोटे बच्चों से मिली जो अभी स्कूल आने लायक नहीं हुए हैं। श्री विलियम्स कस्बे के लिए सड़कों का काम करते हैं। विलियम्स परिवार का फूल और सब्जियों का बेहद सुंदर बाग है। श्रीमती विलियम्स ने मुझे वे सारे डिब्बे दिखाए जिनमें उन्होंने पिछले सप्ताह फल भरे थे।

डण्डर परिवार एक छोटी सी झोंपड़ी में रहता है। श्री डण्डर उस सम्पत्ति के दरबान है। जिसके मालिक न्यूयॉर्क में रहते हैं। श्रीमती डण्डर ने बताया कि लड़कों की आज स्कूल आने की इच्छा ही नहीं हुई। मैंने उन्हें बताने की कोशिश की कि नियमित उपस्थिति कितनी महत्वपूर्ण है, पर उनका कहना था कि अगर लड़के आना ही न चाहें तो वे भला क्या कर सकती हैं। मैं उन पर कोई खास असर न डाल सकीं।

आज रात अपने दैनिक कार्यक्रम की योजना मैंने सावधानी से बनाई। जाहिर है जैसे ही इसमें कमी लगेगी वह फिर से बदल दी जाएगी। अब मैं कक्षाओं के विभाजन छोड़कर बच्चों को उन समूहों में रखने वाली हूँ जो उनके अनुकुल हो। इसका मतलब यह भी होगा कि समूहों की संख्या घटेगी और मैं प्रत्येक समूह के साथ अधिक समय बिता पाऊँगी। बड़े समूहों में काम करने से बच्चों को चर्चा के मौके मिलेंगे, वैचारिक आदान–प्रदान होगा और उनका सामाजिक विकास भी होगा, जो अकेले या छोटे समूहों में काम करने पर संभव नहीं होता।

शुक्रवार 11 सितंबर

हमारा उजाड़ खेल मैदान आसपास के खूबसूरत नजारों से बिलकुल विपरीत दिखता है। मुझे लगा कि स्कूल मैदान का सौन्दर्यीकरण हमारे प्रकृति और विज्ञान के अध्ययन के लिए सही शुरूआत रहेगा क्योंकि यह हमारे अध्ययन को एक व्यावहारिक उद्देश्य भी देगा। मैंने बच्चों को सुझाया कि हम अपने स्कूल परिसर

के कुछ चित्र बनाएँ जिसमें हम वे बदलाव भी दर्ज करें जो हम भविष्य में करना चाहेंगे। हमने ब्लैकबोर्ड पर वे सारे क्षेत्र और स्थिर वस्तुएँ नोट कर लीं जिनको हमें नापना था। तब हमने चौथी से आठवीं तक के सभी बच्चों को दो–दो की जोड़ियाँ में बाँट लिया। बच्चे नापने की टेप और गज फुट्टे लेकर बाहर चले गए और मैंने अपना ध्यान नन्हें मुन्नों की ओर लगाया।

प्राथमिक समूह पतझड़ के लक्षणों की बात कर रहा था। बच्चे दबाने सुखाने के लिए रंगीन पत्ते, तरह–तरह के बीज, कृमिकोश और पतझड़ के जंगली फूल लाएँगें। एलेक्स और गस काँच की शीशी में चींटीयों की बॉबी लाना चाहते हैं, जैसा हमारी विज्ञान की किताब में सुझाया गया है, ताकि वे देख सकें कि चींटियाँ दरअसल शीतनिद्रा करती हैं या नहीं। यह सब हमारे विज्ञान संग्रहालय में जाएगा। हमें कागज की पवन चक्कियाँ बनाने के लिए भी समय मिल पाया।

जब नन्हें बच्चे अपनी कागज की चक्कियों के साथ खेल में जुट गए तो मैंने स्कूल परिसर का चित्र बनाने में बड़े बच्चों की मदद की। हमने बोर्ड पर एक कच्चा सा नक्शा बनाया जिसमें लंबाई, चौड़ाई और दूरियाँ लिखीं, और फिर मिलजलकर यह हिसाब लगाया कि कागज के आकार के अनुसार उनका नाप जोख क्या रहेगा। बातचीत के दौरान बच्चों ने सुझाया कि स्कूल भवन के सामने फूलों की एक छोटी क्यारी बनानी चाहिए।

पुस्तकालय पठन के लिए मैं कुछ समय अलग से तय करती हूँ ताकि बच्चों को पढ़ने में दिशा दे सकूँ। इससे बच्चों को यह बताने का मौका भी मिलेगा कि वे क्या पढ़ रहे हैं। बच्चे पढ़ना पसंद करने लगें इसका एक ही उपाय मुझे आता है। वह यह कि उन्हें पढ़ने दिया जाए, पर संतोषजनक स्थितियों में। आग्रह करने पर प्राथमिक समूह के चार बच्चे सबको यह बताने के लिए स्वेच्छा से आगे आए कि वे कौन सी किताबें पढ़ रहे हैं। मार्था ने अपनी बात बड़ी सिफत से रखी और समूह को मजा आया। विलियम और वॉल्टर कुछ संकोच से बोले, वह भी इतने धीमे कि सुनने में कठिनाई हुई।

स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों की जरूरत जाहिर ही है। मैंने सोचा कि इन आदतों को सुधारने में यथासंभव व्यावहारिक उपाय ही अपनाने हांगे। राजमर्रा के जीवन में स्वास्थ्य के महत्व के बारे में कुछ प्रारंभिक टिप्पणियों के बाद मैंने बच्चों से ही पूछा िकवे सुबह उठने के बाद रात को सोने तक कौन–कौन से ऐसे काम करते हैं जिनका रिश्ता स्वास्थ्य से है। हमारे ब्लैकबोर्ड पर एक लंबी सूची बन गई। तब मैंने रेखांकित किया कि क्योंकि हम जो कुछ भी करते हैं लगभग उन सभी कामों में स्वास्थ्यप्रद आदतें जुड़ी होती हैं, इसलिए स्वास्थ्य का ज्ञान अच्छा जीवन जी पाने के लिए जरूरी है। हमने सोचा हक कि हम सूची में आने वाले प्रत्येक बिन्दु पर बात करेंगे ताकि हम नए स्वास्थ्य आचरणों के बारे में ''क्यों'' के उत्तर तक पहुँच सकें।

आज खेल के पीरियड बेहतर रहे। आज दोनों एण्ड्रयूस् बालिकाओं के आलावा सभी बच्चे खेले। डॉरिस ने कहा कि उसका दिल कमजोर है।

स्कूल के बाद मैंने हमारे 4–एच वानिकी क्लब को व्यवस्थित किया। यह इलाका प्रकृतिक संसाधनों से सम्पन्न है। बच्चे जहाँ रहते हैं उसके बारे में उन्हें काफी कुछ जानना चाहिए। इससे उनकी जड़ें मजबूत होती हैं, उनमें सुरक्षा और किसी स्थान विशेष से होने की भावना पनपती है। क्लब में इस इलाके में रहने वाले हाई स्कूल के विद्यार्थी भी होंगे। वे सब स्कूल के बाद कुछ समय शाला भवन में बिताते रहे हैं। शहर चार मील दूर है और स्कूल के अलावा कोई सामुदायिक संस्था हैं ही नहीं। इसलिए उनके लिए मनोरंजन का कोई दूसरा ठिकाना भी तो नहीं है।

इस पहली बैठक में हम ग्यारह जन थे और हाई स्कूल की पाँच लड़कियाँ। हमने ''खजाने की खोज'' का खेल खेला क्योंकि मैं जानना चाहती थी कि ये बच्चे अपने प्राकृतिक वातावरण के बारे में दरअसल कितना जानते हैं। हरेक सहभागी को किसी ऐसे प्राकृतिक नमूने की पहचान करनी थी जिसका नाम उसे पता हो, और तब वहीं खड़े रहना था, क्योंकि उसे नुकसान पहुँचाने से उसे दल से निकाल दिए जाने की शर्त थी। हाई स्कूल की दो लड़कियों के नेतृत्व में दो टोलियाँ बनीं। हमने अट्ठानवे नमूनों की पहचान की। ये बच्चे अपनी प्रकृति से सच में वाकिफ हैं।

डॉरिस प्रायः बस से घर जाती है, सो मैंने वादा किया कि आज रात अगर वह क्लब के लिए रूकती है तो मैं उसे घर छोड़ दूँगी। मैं उसकी माँ से मिली। वे एक शान्त महिला हैं जो घर से बिरले ही निकलती हैं। मुझे पता चला कि डॉरिस का दिल कमजोर नहीं है। उसकी माँ कहती हैं कि डॉरिस बहुत स्वस्थ बच्ची नहीं है। वह घर में लगातार टैप–नृत्य करती है और थक जाती है। मुझे डॉरिस को दूसरे बच्चों के साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। उसे दूसरों से मेलजोल के अनुभव की दरकार है। श्री एण्ड्रयूस् की मृत्यू हो चुकी है और श्रीमती एण्ड्रयूस को बच्चों के लिए सरकारी पेंशन मिलती है।

सोमवार, 14 सितम्बर

एकल–शिक्षक विद्यालय में पढ़ाने सम्बन्धी इतनी बारीकियाँ हैं कि मुझे लगता है मैं ढ़ंग से कोई भी काम करना तब तक नहीं सीख पाऊँगी जब तक मैं उनमें से कुछ पर ध्यान केन्द्रित रखूँगी। मैं इन बच्चों को दिन में कई बार निर्देशित पठन अनुभव देने की कोशिश करूँगी।

इस तरह की शाला का प्रबंध कोई बड़ी समस्या नहीं होनी चाहिए। अगर कुछ रोजमर्रा के काम व्यवस्थित हो जाएँ और कुशलता से निपटा लिए जाएँ, जैसे कमरे और परिसर की सफाई, तो हम दूसरे कामों पर ध्यान दे सकते हैं। पर एक दूसरी समस्या भी है। वह है खेल मैदान का प्रबन्ध जहाँ कुछ समय तक तो सावधानी से नजर रखना जरूरी होगा। बच्चे दोपहरी के समय इधर–उधर भटकते रहते थे। सो उन्हें लग रहा है कि मैं उनका मध्यावकाश छीन ले रही हूँ क्योंकि मैं शारीरिक शिक्षा के पीरियड में उन्हें खेलने को कहती हूँ। स्कूल दरअसल छोटे–छोटे गुटों में बँटा हुआ है और एक–दूसरे में उनकी खास रूचि नहीं है। उनमें सामूहिक चेतना का अभाव है।

गस अपने पालतू सफेद चूहे को स्कूल लाया और हमने उस पर एक कहानी लिखी। प्राथमिक समूह अब उसे पढ़ना सीख रहा है। कहानी बनाना कठिन काम था और मुझे बच्चों से कई सवाल पूछने पड़े और तमाम सुझाव भी देने पड़े।

मैंने दो बड़े समूहों को इतिहास की दूसरी किताबें दी हैं जो इतनी कठिन नहीं है। बच्चे उन सवालों के जवाब भी लिखने लगे हैं जो मैं बोर्ड पर लिखती हँ, परन्तु हम चर्चाओं के दौरान उन पर्चों को इस्तेमाल नहीं करते। जब बच्चों को किसी प्रश्न का उत्तर नहीं आता तब हम किताब में उत्तर तलाशते हैं और उसे बोलकर पढ़ते हैं। तब वह जवाब हम अपने शब्दों में लिखते हैं। यह प्रक्रिया उबाऊ है, पर इन बच्चों के लिए यह पहला कदम है। वे ऐतिहासिक सामग्री पढ़ना सीख रहे हैं, और अपने लेखन में तथ्यात्मकता और स्पष्टता लाने की कोशिश कर रहे हैं। इसमें काफी समय लग रहा है, लेकिन बाद में इसी कारण समय बचेगा भी।

मंगलवार, 15 सितम्बर

बच्चे जिम्मेदारियाँ लेकर जवाबदेह बनना सीखते हैं। अगर उन्हें बुद्धिमान नागरिक बनना है तो एक नागरिक की जिम्मेदारियों को निभाने का अभ्यास तो उन्हें करना ही होगा। दिन खत्म होने पर मैंने एक विज्ञान क्लब बनाने की चर्चा बच्चों से की। उन्हें ऐसे क्लब की गतिविधियों का कोई अन्दाज ही नहीं था, अतः ज्यादातर बातचीत मुझे ही करनी पड़ी। मैंने समझाया कि समूह के समक्ष आने वाली समस्याओं का उन्हें साझा समाधान करना होगा और हम अपने स्कूल को रहने–जीने का एक बेहतर स्थान बनाने की कोशिश करेंगे। हमने क्लब का गठन किया और पदाधिकारी चुनें। जब मैंने बच्चों से पूछा कि उनका अध्यक्ष कैसा होना चाहिए तो उनका जवाब था कि उसे दयालु, अच्छा और बड़ा होना चाहिए। उनका कहना था कि उपाध्यक्ष की भी ठीक यही योग्यताएँ होनी चाहिए और सचिव को लिखने में माहिर होना चाहिए। एना हमारी पहली अध्यक्ष है, रैल्फ हमारा उपाध्यक्ष, और मेरी हमारी सचिव। चुनाव के बाद हमने बोर्ड पर उन जिम्मेदारियों की सूची बनाई जिन्हें प्रतिदिन निभाना होगा और हमने यह भी तय किया कि ये काम कौन–कौनन करेगा।

सामान्य प्रबंधक	–	ओल्गा
कमरे की सफाई	–	रैल्फ और एडवर्ड
लड़कियों के टॉयलेट की सफाई	–	रूथ
लड़कों के टॉयलेट की सफाई	–	जॉर्ज
झाड़–पोंछ	–	कैथरीन व एलिस
हॉल प्रबंधक	–	एना
पुस्तकालय प्रभारी	–	सोफिया
संग्रहालय प्रभारी	–	मे
हाथों की धुलाई	–	एण्ड्रयू
अलाव और कमरे का तापमान	–	फ्रैंक
मेंजों का निरीक्षण	–	वॉरेन
झण्डे को चढ़ाना–उतारना	–	डॉरिस
खिड़कियाँ	–	मेरी

शिक्षक/प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र के लिए पांच प्रपत्र हैं, यह समग्र प्रतिवेदन बनाने में मदद करेगा।

शिक्षक/प्रधान पाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र

प्रपत्र – 9 (प्रथम)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....विद्यालय का नाम...

कक्षा..अध्यापन विषय.. दिनांक ....

1. क्या प्रशिक्षु शिक्षक शाला में तथा कक्षा में समय पर उपस्थित होता था ?
2. क्या प्रशिक्षु शिक्षक कक्षा में शिक्षण योजना के अनुरूप तैयारी के साथ अध्यापन करता था?
3. क्या अध्यापन कार्य शिक्षण योजना के अनुरूप था? यदि नहीं तो वास्तविक अध्यापन में कितना अंतर था और अंतर होने का कारण क्या था?
4. कक्षा स्तर के अनुरुप अध्यापन कार्य था या नहीं?
5. शिक्षक ने प्रशिक्षु शिक्षक को कौन–कौन से सुझाव दिए?
6. शिक्षण के दौरान छात्रों की कैसी सहभागिता थी?
7. शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन कैसा था?
8. क्या प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधि बच्चों के सीखने के लिए उपयुक्त थी?
9. शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा बच्चों की समझ के स्तर के अनुरुप थी या नहीं?
10. क्या समय–समय पर क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता था?
11. 60 शिक्षण दिवसों में प्रशिक्षु शिक्षक की उपस्थिति..................... अनुपस्थिति............
12. समग्र अभिमत

हस्ताक्षर अध्यापक/प्रधानपाठक

शिक्षक/प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र के लिए पांच प्रपत्र हैं, यह समग्र प्रतिवेदन बनाने में मदद करेगा।

शिक्षक/प्रधान पाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र

प्रपत्र – 9 (द्वितीय)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....विद्यालय का नाम...

कक्षा..अध्यापन विषय.. दिनांक ....

1. क्या प्रशिक्षु शिक्षक शाला में तथा कक्षा में समय पर उपस्थित होता था ?
2. क्या प्रशिक्षु शिक्षक कक्षा में शिक्षण योजना के अनुरूप तैयारी के साथ अध्यापन करता था?
3. क्या अध्यापन कार्य शिक्षण योजना के अनुरूप था? यदि नहीं तो वास्तविक अध्यापन में कितना अंतर था और अंतर होने का कारण क्या था?
4. कक्षा स्तर के अनुरुप अध्यापन कार्य था या नहीं?
5. शिक्षक ने प्रशिक्षु शिक्षक को कौन–कौन से सुझाव दिए?
6. शिक्षण के दौरान छात्रों की कैसी सहभागिता थी?
7. शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन कैसा था?
8. क्या प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधि बच्चों के सीखने के लिए उपयुक्त थी?
9. शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा बच्चों की समझ के स्तर के अनुरुप थी या नहीं?
10. क्या समय–समय पर क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता था?
11. 60 शिक्षण दिवसों में प्रशिक्षु शिक्षक की उपस्थिति..................... अनुपस्थिति............
12. समग्र अभिमत

हस्ताक्षर अध्यापक/प्रधानपाठक

शिक्षक/प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र के लिए पांच प्रपत्र हैं, यह समग्र प्रतिवेदन बनाने में मदद करेगा।

शिक्षक/प्रधान पाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र

प्रपत्र – 9 (तृतीय)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....विद्यालय का नाम...

कक्षा...अध्यापन विषय.. दिनांक ......

1. क्या प्रशिक्षु शिक्षक शाला में तथा कक्षा में समय पर उपस्थित होता था ?

2. क्या प्रशिक्षु शिक्षक कक्षा में शिक्षण योजना के अनुरूप तैयारी के साथ अध्यापन करता था?

3. क्या अध्यापन कार्य शिक्षण योजना के अनुरूप था? यदि नहीं तो वास्तविक अध्यापन में कितना अंतर था और अंतर होने का कारण क्या था?

4. कक्षा स्तर के अनुरुप अध्यापन कार्य था या नहीं?

5. शिक्षक ने प्रशिक्षु शिक्षक को कौन–कौन से सुझाव दिए?

6. शिक्षण के दौरान छात्रों की कैसी सहभागिता थी?

7. शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन कैसा था?

8. क्या प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधि बच्चों के सीखने के लिए उपयुक्त थी?

9. शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा बच्चों की समझ के स्तर के अनुरुप थी या नहीं?

10. क्या समय–समय पर क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता था?

11. 60 शिक्षण दिवसों में प्रशिक्षु शिक्षक की उपस्थिति.................... अनुपस्थिति...........

12. समग्र अभिमत

हस्ताक्षर अध्यापक/प्रधानपाठक

शिक्षक/प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र के लिए पांच प्रपत्र हैं, यह समग्र प्रतिवेदन बनाने में मदद करेगा।

शिक्षक/प्रधान पाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र

प्रपत्र – 9 (चतुर्थ)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....विद्यालय का नाम..

कक्षा...अध्यापन विषय.. दिनांक ....

1. क्या प्रशिक्षु शिक्षक शाला में तथा कक्षा में समय पर उपस्थित होता था ?

2. क्या प्रशिक्षु शिक्षक कक्षा में शिक्षण योजना के अनुरूप तैयारी के साथ अध्यापन करता था?

3. क्या अध्यापन कार्य शिक्षण योजना के अनुरूप था? यदि नहीं तो वास्तविक अध्यापन में कितना अंतर था और अंतर होने का कारण क्या था?

4. कक्षा स्तर के अनुरुप अध्यापन कार्य था या नहीं?

5. शिक्षक ने प्रशिक्षु शिक्षक को कौन–कौन से सुझाव दिए?

6. शिक्षण के दौरान छात्रों की कैसी सहभागिता थी?

7. शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन कैसा था?

8. क्या प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधि बच्चों के सीखने के लिए उपयुक्त थी?

9. शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा बच्चों की समझ के स्तर के अनुरुप थी या नहीं?

10. क्या समय–समय पर क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता था?

11. 60 शिक्षण दिवसों में प्रशिक्षु शिक्षक की उपस्थिति.................... अनुपस्थिति...........

12. समग्र अभिमत

हस्ताक्षर अध्यापक/प्रधानपाठक

शिक्षक/प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र के लिए पांच प्रपत्र हैं, यह समग्र प्रतिवेदन बनाने में मदद करेगा।

शिक्षक/प्रधान पाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र

प्रपत्र – 9 (पंचम)

प्रशिक्षु शिक्षक का नाम ....विद्यालय का नाम..

कक्षा..अध्यापन विषय.. दिनांक ....

1. क्या प्रशिक्षु शिक्षक शाला में तथा कक्षा में समय पर उपस्थित होता था ?

2. क्या प्रशिक्षु शिक्षक कक्षा में शिक्षण योजना के अनुरूप तैयारी के साथ अध्यापन करता था?

3. क्या अध्यापन कार्य शिक्षण योजना के अनुरूप था? यदि नहीं तो वास्तविक अध्यापन में कितना अंतर था और अंतर होने का कारण क्या था?

4. कक्षा स्तर के अनुरुप अध्यापन कार्य था या नहीं?

5. शिक्षक ने प्रशिक्षु शिक्षक को कौन–कौन से सुझाव दिए?

6. शिक्षण के दौरान छात्रों की कैसी सहभागिता थी?

7. शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन कैसा था?

8. क्या प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधि बच्चों के सीखने के लिए उपयुक्त थी?

9. शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा बच्चों की समझ के स्तर के अनुरुप थी या नहीं?

10. क्या समय–समय पर क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता था?

11. 60 शिक्षण दिवसों में प्रशिक्षु शिक्षक की उपस्थिति.................... अनुपस्थिति...........

12. समग्र अभिमत

हस्ताक्षर अध्यापक/प्रधानपाठक